# जैनत्व की गौरव गाथा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

भाग-2

श्रवणबेलगोला गोम्मटेश बाहुबली की निकाली गई भव्य झाँकी को सलामी देते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम साथ में उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह जी शेखावत।

# डाक विभाग द्वारा जारी
# जैनधर्म से सम्बन्धित सामग्री

- किसी भी देश की डाक सामग्री उस देश की संस्कृति, इतिहास और महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा को बताता है।
- धर्म और समाज की मान्यताओं को देश-विदेश में जन-जागरण एवं सूचना देने का कार्य करता है।
- शिल्प और मूर्तिकला, दीवार चित्र तथा ऐसी दुर्लभ और अनुपलब्ध सामग्री को डाक विभाग के माध्यम से प्रकाश में लाया जा सकता है।
- हर देश के अभिलेखागार में इनका रिकार्ड रखा जाता है तथा उन अभिलेखागार के प्रकाशन शताब्दियों तक प्रकाशित होते रहते हैं और वे संस्कृति और संरक्षण के बड़े स्रोत बन जाते हैं।

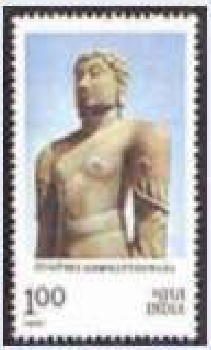

डाक विभाग ने अभी तक जैनधर्म से सम्बन्धित अनेक तरह की सामग्री जारी की है, जो निम्न प्रकार है -

| कब | से | कब तक | संख्या | सामग्री |
|---|---|---|---|---|
| 18.10.1929 | - | 25.09.11 | 40 | डाक टिकट। |
| 02.11.1977 | - | 05.01.2012 | 16 | नियमित चित्रमय मुहरें। |
| 28.03.1973 | - | 18.06.2012 | 124 | विशेष आवरण एवं विशेष लिफाफे। |
| 1919 | - | 28.01.2012 | 41 | जैनधर्म से सम्बन्धित विशेष आवरण। |
| अक्टूबर 1956 | - | 13.01.2012 | 26 | विशेष ध्येय वाक्य सहित मुहरें। |
| 27.07.1978 | - | 14.10.2009 | 12 | चित्रमय पोस्टकार्ड। |
| | | | 16 | नियमित मीटर युक्त मुहरें। |
| | | | 27 | ऐसे डाकघर हैं जिनका नाम जैनधर्म से सम्बन्धित है। |

साभार : सुधीर जैन, सतना

# जैनत्व की गौरव गाथा

भाग-2

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रकाशक

धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

सागर ( म. प्र. )

- आशीर्वाद
  श्रमण शिरोमणि
  आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज

- प्रेरणा
  मुनि श्री 108 निर्वेगसागरजी महाराज

- कृति
  जैनत्व की गौरव गाथा भाग-2

- ISBN
  978-93-82950-07-3

- प्रस्तुति
  ब्र. डॉ. भरत जैन

- संस्करण
  द्वितीय, मई, 2013

- आवृत्ति
  2200

- मूल्य
  40/-

- प्राप्ति स्थान
  धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
  बाहुबली कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
  मो. 094249-51771
  dharmodayat@gmail.com

- मुद्रक
  विकास आफसेट, भोपाल

## प्रासंगिक

परिवर्तन के इस दौर में सभी प्रभावित दिखलाई दे रहे हैं और वह प्रभाव साहित्य जगत् में भी आया। उसी के फलस्वरूप अवतरित हुआ प्रस्तुत प्रयास।

जैन इतिहास की पुस्तकें एकत्रित करना एवं वर्तमान में उनके पढ़ने का वक्त आज के मानव के पास कहाँ है ? उनको संक्षेप में दिग्दर्शन कराने वाली यह कृति हमें अपने पूर्वजों द्वारा सौंपी विरासत को संरक्षित, संवर्द्धित एवं पल्लवित करने की तथा स्वयं भी रचनात्मक कार्यों को कर गुजरने की प्रेरणा दिलाती है।

नई पीढ़ी जो वास्तव में हमारे ऐतिहासिक धरोहर के ज्ञान से अनविज्ञ हैं। खास तौर पर महानगरों में जॉब कर रहे हैं, उन तक ऐसी संक्षिप्त जानकारियाँ पहुँचनी चाहिए ताकि वह जीवन का लक्ष्य मात्र कमाना-खाना और सोना ही नहीं वरन् 'यश' के कार्य करना भी है।

'जैनत्व की गौरव गाथा' का द्वितीय भाग आपके हाथों में है, जन-जन तक पहुँचे ऐसी कोशिश कीजिए। इतिहास के सागर में से मोती निकालने के कार्य में ब्रह्मचारी भाई डॉ. भरत जैन का यह प्रयास अनुकरणीय, प्रशंसनीय व स्तुत्य है, वे अविरल-अविराम और अनवरत ऐसे कार्यों में लगे रहें।

ब्र. संजय भैया
वर्णी दिग. जैन गुरुकुल
जबलपुर

# प्राक्कथन .......

इतिहास का निर्माण मनुष्य ने किया और मनुष्य को निर्माण की दिशा इतिहास ने दी। अतीत का निष्पक्ष लेखा-जोखा वर्तमान को संवारने में सहायक हो सकता है, बशर्ते उससे हम सबक लेना चाहें। जैन इतिहास की उपयोगिता में आस्था रखने वाले अनेक विद्वान् हुए हैं। जिन्होंने जैन इतिहास लेखन में अपनी लेखनी चलाकर प्राचीन काल से लेकर आज तक जैनधर्म, समाज, संस्कृति का विहंगावलोकन अनेक साधनों के आधार पर किया है। इतिहासकारों ने जैनधर्म और दर्शन के इतिहास को लिखने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यदि सम्पूर्ण इतिहास को पढ़ना चाहें तो हमारा पूरा जीवन निकल सकता है। परन्तु आज हमारे इतिहास, गौरव को जानने के लिए नई पीढ़ी के पास समय नहीं है।

आने वाली जैन युवा पीढ़ी जैनत्व के गौरव, इतिहास को जान सके, इन्हीं कुछ भावनाओं को लेकर हमने यह लघु प्रयास किया है।

इस कृति का समारम्भ 'जैन शासन ध्वज' तथा समापन 'विश्व की अद्वितीय धरोहर : सिवनी का रजत रथ' से किया गया है। इस कृति में जैन संस्कृति और इतिहास की गौरव गाथा से सम्बन्धित 41 बिन्दुओं पर संक्षिप्त विवेचन सचित्र प्रस्तुत किया गया है।

मैं अपने इस विश्वास की अभिव्यक्ति करता हूँ कि कई भागों में प्रकाशित होने वाली यह कृति प्रत्येक शोधार्थी, जैन संस्कृति के प्रेमी, प्रत्येक विद्यालय एवं पाठशालाओं के बच्चों एवं शिक्षकों के लिए, ज्ञान के आराधकों के लिए उपयोगी और संग्रहणीय प्रमाणित होगी। प्रत्येक जैन व्यक्ति हमारे गौरव को बिन्दुशः जान सके। उन्हें पता चल सके कि हमने विकास के किसी भी क्षेत्र को अनछुआ नहीं रखा है।

इस कृति में जिन महत्त्वपूर्ण कृतियों, ग्रंथों से सामग्री का चयन प्रत्यक्षतः परोक्षतः किया गया है, उन सब लेखकों के प्रति मैं अपने हृदय के गहनातिगहन तल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के पावन चरणों में नमन करते हुए उन्हीं के परम पवित्र करकमलों में सादर समर्पित।

डॉ. भरत जैन

इस कृति को तैयार करने में निम्न कृतियों, ग्रन्थों की मदद ली गई है, विशेष अध्ययन और संदर्भ के इच्छुक पाठकों को निम्न पुस्तकें देखना चाहिए -

भारतीय इतिहास : एक दृष्टि, प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलायें, गिरनार गौरव, समणसुत्तं, दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि, जैन विरासत, जन-जन के महावीर, जैनधर्म का प्राचीन इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम में जैन, दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका आदि।

# अनुक्रम


| क्र. | विषय | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| 1. | जैन शासन ध्वज | 5 |
| 2. | हमारा राष्ट्रीय चिह्न और सम्राट् अशोक | 6 |
| 3. | कलिंग चक्रवर्ती सम्राट् महामेघवाहन ऐल खारवेल | 7 |
| 4. | आदि चिह्न : स्वस्तिक | 8 |
| 5. | गोम्मटेश बाहुबली की झाँकी को प्रथम पुरस्कार | 9 |
| 6. | संसद भवन में जैन भित्ति-चित्र | 10 |
| 7. | सार्वभौमिक प्रार्थना : मेरी भावना | 11 |
| 8. | भारत की प्राचीन भाषा : प्राकृत | 12 |
| 9. | भारत सरकार द्वारा जारी जैन सिक्के | 13 |
| 10. | राष्ट्रगान में जैन | 14 |
| 11. | श्रमण संस्कृति के उन्नायक : चा. च. आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज | 15 |
| 12. | महान् शिक्षा प्रसारक : क्षुल्लक श्री गणेशप्रसादजी वर्णी | 16 |
| 13. | विनोबा भावे पर जैनधर्म का प्रभाव | 17 |
| 14. | दान चिन्तामणि : एक श्रेष्ठ कृति | 18 |
| 15. | अभिनव महाकाव्य : मूकमाटी | 20 |
| 16. | अद्भुत ग्रन्थ : विद्याष्टकम् | 21 |
| 17. | विश्वकोशों की परम्परा में अद्वितीय : जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश | 22 |
| 18. | जैन गीता : समणसुत्तं | 23 |
| 19. | जैन आयुर्वेद ग्रन्थ : कल्याणकारकम् | 24 |
| 20. | विदेशों में जैन मंदिर | 25 |
| 21. | तीर्थ शिरोमणि : श्री गिरनारजी | 27 |
| 22. | ऐतिहासिक : सोनीजी की नसियाँ | 28 |
| 23. | अद्भुत स्तोत्र : भक्तामर | 29 |
| 24. | पावन पर्व : अक्षय तृतीया | 30 |
| 25. | दक्षिण का सम्मेदशिखर : मांगीतुंगीजी | 31 |
| 26. | श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थ | 32 |
| 27. | विश्व की अद्वितीय रचना : जम्बूद्वीप | 33 |
| 28. | विश्व क्षमा दिवस : क्षमावाणी | 34 |
| 29. | अमर शहीद मोतीचंद जैन | 35 |
| 30. | भक्त शिरोमणि : श्री पाड़ाशाह | 36 |
| 31. | विद्वत्परम्परा के पितामह : गुरुवर्य पं. गोपालदासजी वरैया | 37 |
| 32. | धैर्य तथा उत्तुंग व्यक्तित्व के उद्योगपति : सेठ बालचंद हीराचंद दोशी | 38 |
| 33. | जैन लॉ के प्रणेता : बैरिस्टर चम्पतराय | 40 |
| 34. | आदर्श मुख्यमंत्री : श्री मिश्रीलाल गंगवाल | 41 |
| 35. | श्रीमंत सरसेठ हुकमचंद जैन | 42 |
| 36. | साहित्य मनीषी उत्कृष्ट शिक्षाविद् : डॉ. पण्डित पन्नालाल साहित्याचार्य | 43 |
| 37. | युवा जैन संगठन : वीर सेवा दल | 44 |
| 38. | विद्वत् परम्परा का गौरव : श्रमण संस्कृति संस्थान | 45 |
| 39. | अनोखा क्षेत्र : दिगम्बर जैन चैतन्य वन संस्थान | 46 |
| 40. | विलक्षण प्रतिभावान युवा जैन वैज्ञानिक | 47 |
| 41. | विश्व की अद्वितीय धरोहर : सिवनी का रजत रथ | 48 |

# 1 जैन शासन ध्वज

जैन समाज के सभी आम्नाओं के लिए एक जैन ध्वज हो, ऐसा एक प्रस्ताव सभी जैन सम्प्रदायों के लिए लम्बे अरसे से विचारणीय था। अतः वर्ष 1971 ई. में आचार्य श्री विद्यानन्दजी, मुनि श्री कान्तिसागरजी, मुनि श्री सुशीलकुमारजी, मुनि श्री महेन्द्रकुमारजी, जैन समाज के इन चारों मुनिराजों ने दिल्ली स्थित वैद्यवाड़ा, श्री दिगम्बर जैन धर्मशाला में जैन शासन ध्वज के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करते हुए ऐतिहासिक एवं धार्मिक प्रामाणिकता के आधार पर पाँच रंगों के ध्वज को सर्वसम्मति से अनुमोदित कर ऐतिहासिक निर्णय के साथ विश्व जैन समाज को ध्वज प्रदान किया, जिसका भगवान् महावीर स्वामी के 2500 वें निर्वाण-महोत्सव के अवसर पर वर्ष 1974-75 ई. में व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

जैन ध्वज की मध्य पट्टिका पर अंकित स्वस्तिक जहाँ प्राचीनता को दर्शाता है, वही प्राणी के लक्ष्य को भी दर्शाता है तथा चतुर्गति का भी प्रतीक है।

- यह ध्वज आकार में आयताकार है तथा इसकी लम्बाई व चौड़ाई का अनुपात 3:2 है।
- इस ध्वज में पाँच रंग हैं- लाल, पीला, सफेद, हरा और गहरा नीला। लाल, पीले, हरे, नीले रंग की पट्टियाँ चौड़ाई में समान हैं तथा सफेद रंग की पट्टी अन्य रंगों की पट्टी से चौड़ाई में दुगुनी होती है।
- ध्वज के बीच में जो स्वस्तिक है, उसका रंग केसरिया है। जैन समाज के इस सर्वमान्य ध्वज में पाँच रंगों को अपनाया गया है। ये पाँच रंग पंच परमेष्ठी के प्रतीक माने गए हैं।

| | | |
|---|---|---|
| श्वेत रंग | - | अर्हन्त परमेष्ठी। |
| लाल रंग | - | सिद्ध परमेष्ठी। |
| पीला रंग | - | आचार्य परमेष्ठी। |
| हरा रंग | - | उपाध्याय परमेष्ठी। |
| नीला रंग | - | साधु परमेष्ठी। |

स्फटिकं श्वेतं रक्तं च पीत-श्यामनिभं तथा।
एतत्पञ्चपरमेष्ठिनः पञ्चवर्णं यथाक्रमम्॥

मानसार, अध्याय 35

जैन ध्वज पञ्चपरमेष्ठी के प्रतीक के साथ-साथ विश्वधर्म, विश्वप्रेम, विश्व शान्ति का भी उद्घोषक है। ध्वज चेतना, श्रद्धा, समर्पण का प्रतीक है। ध्वज गौरव और गरिमा से मण्डित उज्ज्वल आदर्शों संकल्पों के साथ-साथ एकता/ अखण्डता का प्राण है। ध्वज को जिनशासन की प्रभावना का प्रतीक माना जाता है।

2

# हमारा राष्ट्रीय चिह्न और सम्राट् अशोक

- हमारा राष्ट्रीय चिह्न जिसे हमने सम्राट् अशोक की विरासत के रूप में प्राप्त किया है। यह चिह्न सम्राट् अशोक की शिक्षाओं की स्मृति को ताजा करता ही है, वरन् इस चिह्न में हमारी असीम सांस्कृतिक विरासत भी झलकती है।
- सम्राट् अशोक के स्तम्भों में जैन तीर्थङ्करों के चिह्न अंकित हैं। धर्म चक्र में 24 आरे तीर्थङ्करों की संख्या 24 के प्रतीक हैं। चतुर्मुखी सिंह भगवान् महावीर का चिह्न है। बैल, हाथी और घोड़ा क्रमशः भगवान् ऋषभदेव, अजितनाथ और संभवनाथ (पहले, दूसरे, तीसरे) तीर्थङ्कर के चिह्न हैं।
- भगवान् महावीर और अहिंसा धर्म के संस्कारों के कारण अशोक के हृदय में तीर्थङ्करों और जैनधर्म के प्रति बहुत सम्मान था। अहिंसा के गहन संस्कारों के कारण ही कलिंग के युद्ध में भीषण रक्तपात देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा और उसने भविष्य में रक्तपात वाले युद्ध न करने की घोषणा कर दी।
- सम्राट् अशोक आरम्भिक काल में जैन थे। उनके पिता बिन्दुसार, पितामह चन्द्रगुप्त आदि भी दिगम्बर जैनधर्म की उपासना करते थे, उन्होंने बाद में बौद्धधर्म स्वीकार किया। उनके उत्तराधिकारियों ने जैनधर्म की समृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने अधिकांश शिलालेख प्राकृत भाषा में खुदवाये थे।

# 3 कलिंग चक्रवर्ती सम्राट् महामेघवाहन ऐल खारवेल

- खारवेल दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का सर्वाधिक शक्तिशाली, प्रतापी एवं दिग्विजयी राजा था। साथ ही वह राजर्षि परम जिन भक्त भी था। उन्होंने श्रावक के व्रत ग्रहण किए, पश्चात् गृह और राजकार्य से विराम लेकर जैन मुनि के रूप में कुमारी पर्वत पर तपश्चरण करके आत्मसाधना की।
- सम्राट् खारवेल का शिलालेख उड़ीसा में पुरी जिला अन्तर्गत भुवनेश्वर से तीन मील दूर खण्डगिरि पर्वत के उदयगिरि पर बने हुए हाथी गुम्फा, विशाल प्राचीन गुफा मंदिर के मुख और छत पर सत्रह पंक्तियों में लगभग 84 फीट के विस्तार में उत्कीर्ण है। लेख के प्रारम्भ में अरिहंतों एवं सर्व सिद्धों को नमस्कार किया है।
- अपने समय में उन्होंने कलिंग देश (उड़ीसा) को भारत वर्ष की सर्वोपरि राज्य शक्ति बना दिया था तथा लोक हित और जैनधर्म की प्रभावना के भी अनेक चिरस्मरणीय कार्य किए थे।
- शिलालेख के अनुसार राज्यकाल के तेरहवें वर्ष में इस राजर्षि ने सुपर्वत-विजय-चक्र (प्रान्त) में स्थित कुमारी पर्वत पर अरिहंतों की पुण्य स्मृति में निषद्यकाएँ निर्माण करायी थीं।
- अपने शासन के 200-250 वर्ष पूर्व वहाँ की प्रसिद्ध आदिनाथ भगवान् (कलिंगजिन) की प्रतिमा जो कि नन्दराजा द्वारा ले जायी गई थी। उस प्रतिमा को राजा खारवेल ने मगध पर विजय प्राप्त कर पुनः वापस लाया था।
- तपोधन मुनियों के आवास हेतु गुफायें बनवायीं। अर्हन्मंदिर के निकट उसने एक विशाल मनोरम सभा मण्डप (अर्कासन गुम्फा) बनवाया था। जिसके मध्य में एक बहुमूल्य रत्नजड़ित मानस्तम्भ स्थापित कराया। महामुनि सम्मेलन भी कराया तथा द्वादशांग श्रुत का पाठ भी कराया था।

# 4 आदि चिह्न : स्वस्तिक

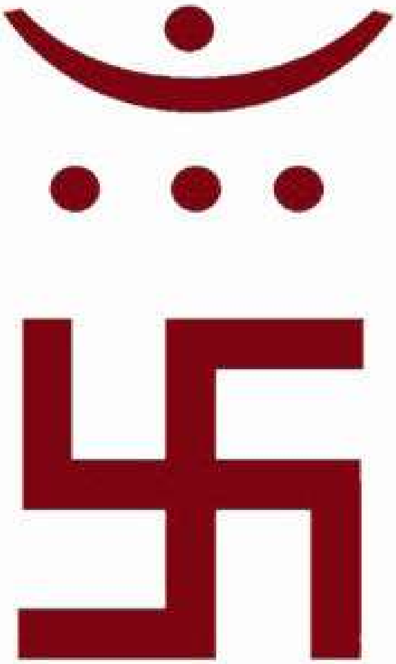

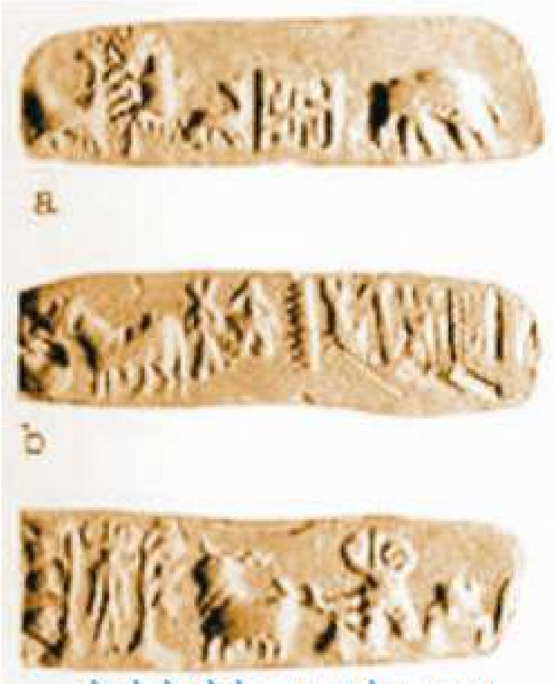


मोहनोजोदड़ो के उत्खनन से प्राप्त मुहर

- स्वस्तिक प्राचीन काल से जैन संस्कृति में मंगल प्रतीक माना जाता रहा है। इसलिए किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले स्वस्तिक चिह्न अंकित किया जाता है।
- शिलांकित प्राचीन स्वस्तिक दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व सम्राट् खारवेल के अभिलेख में और मथुरा के शिल्प में उपलब्ध हुए हैं।
- इतिहास की दृष्टि से मथुरा के पुरातत्त्व संग्रहालय में स्थित तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति पर बने हुए सात फणों में से एक पर स्वस्तिक अंकित है।
- स्वस्तिक का चिह्न मोहनोजोदड़ो के उत्खनन से प्राप्त अनेक मुहरों में देखा गया है।
- स्वस्तिक की चार भुजाएँ चार गति की प्रतीक हैं।
  ऊपर की तीन बिन्दु- सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्‌चारित्र को दर्शाती हैं।
  ऊपर स्थित अर्द्धचन्द्र सिद्धशिला को लक्षित करता है।
  अर्द्धचन्द्र के ऊपर जो बिन्दु है, वह उत्तम सुख का प्रतीक है।
- स्वस्तिक सौभाग्य का प्रतीक है- ''भारतीय संस्कृति में मांगलिक कार्यों में प्रत्येक कार्य की शुरुआत में यह चिह्न बनाया जाता है तथा इसे कल्याण का प्रतीक माना जाता है।''
- अनंत शक्ति, सौंदर्य, चेतना, सुख, समृद्धि, परम सुख का प्रतीक है।
- स्वस्तिक के चिह्न की बनावट ऐसी होती है कि वह दसों दिशाओं से सकारात्मक एनर्जी को अपनी तरफ खींचता है।

# 5 गोम्मटेश बाहुबली की झाँकी को प्रथम पुरस्कार

एक शिला में निर्मित विश्व की विशालतम मूर्ति श्रवणबेलगोला ( कर्नाटक ) स्थित भगवान् गोम्मटेश बाहुबली की है। गणतंत्र दिवस समारोह परेड में 26 जनवरी, 2005 को नई दिल्ली के राजपथ पर कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित भगवान् गोम्मटेश वाली झाँकी को प्रथम पुरस्कार मिला था।

श्रवणबेलगोला गोम्मटेश बाहुबली की निकाली गई भव्य झाँकी को सलामी देते हुए महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम साथ में उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावतजी।

## मैं ही नहीं, सारा राष्ट्र जैन है

श्रीमती इन्दिरा गाँधी

बात फरवरी, 1981 की है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरागाँधी श्रवणबेलगोला में भगवान् बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह के अवसर पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर दिल्ली लौट आईं थीं। संसद में बहस के दौरान कुछ संसद सदस्यों ने उनकी इस यात्रा पर आपत्ति की तो **श्रीमती गाँधी ने कहा** -'' मैं भारतीय विचारों की एक प्रमुख धारा के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने वहाँ गई थी। जिसने भारतीय इतिहास व संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा है और स्वतंत्रता संग्राम में अपनाए गए तरीके भी इससे प्रभावित हुए हैं। गाँधी जी भी जैन तीर्थङ्करों द्वारा प्रतिपादित अहिंसा व अपरिग्रह के सिद्धान्तों से प्रभावित हुए।''

इस पर एक संसद ने व्यंग्य करते हुए प्रश्न किया कि क्या आप जैन हो गई हैं ? तब श्रीमती गाँधी ने गर्जना के साथ उत्तर दिया- केवल मैं ही नहीं, सारा राष्ट्र जैन है, क्योंकि हमारा राष्ट्र अहिंसावादी है और जैनधर्म अहिंसा में विश्वास रखता है। जैनधर्म के आदर्श के रास्ते को हम नहीं छोड़ेंगे। यह सुनकर प्रश्नकर्ता बगलें झाँकने लगे।

# 6 संसद भवन में जैन भित्ति-चित्र

- भारत में अनादिकाल से सार्वजनिक स्थानों, मन्दिरों, महलों आदि को चित्रों और भित्ति-चित्रों से सज्जित करने की प्रथा चली आ रही है।
- ये कलाकृतियाँ युग विशेष के लोगों के जीवन, उनकी संस्कृति और परम्पराओं की प्रतीक हैं।
- हमारे लिए अब ये भारत की प्राचीन महान् सभ्यताओं और साम्राज्यों का स्मरण कराने वाली हैं और साथ ही उन महान् सम्राटों, वीरों और संतों का भी स्मरण कराने वाली हैं, जिन्होंने विभिन्न युगों में अपने कृत्यों और महान् उपलब्धियों से हमारी इस भूमि को महिमा मण्डित किया। अतः यह स्वाभाविक ही था कि आधुनिक भारत के निर्माताओं ने लोकतंत्र के आधुनिक मंदिर अर्थात् संसद भवन को इस देश के इतिहास के महान् क्षणों का चित्रण करने वाले चित्रों से सजाकर भारत के अतीत के गौरव को कुछ सीमा तक पुनरुजीवित करने का प्रयत्न करना उपयुक्त समझा।
- सर्वप्रथम इस विचार की परिकल्पना लोक सभा के प्रथम अध्यक्ष स्वर्गीय श्री जी.वी. मावलंकर ने की। ज्योंहि कोई व्यक्ति संसद भवन में प्रवेश करता है वह निचली मंजिल पर बाहरी बरामदे की दीवारों पर सुशोभित सुन्दर चित्रों की पंक्ति को देखकर मंत्र-मुग्ध हो जाता है।
- ये चित्र भारत के विख्यात कलाकारों की कृतियाँ हैं और इनमें वैदिक युग से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ अंत हुए अंग्रेजों के राज्यकाल तक के, इस देश के लंबे इतिहास के दृश्य चित्रित किए गए हैं।
- कुछ भित्ति-चित्रों को 1999 के कैलेण्डर के पृष्ठों पर दर्शाया गया है। उन चित्रों में से जैनधर्म के तीर्थङ्करों की परम्परा को दर्शाने वाला यह चित्र प्रस्तुत है –

# 7 सार्वभौमिक प्रार्थना : मेरी भावना

मेरी भावना के रचयिता जैन इतिहास के सूक्ष्म अन्वेषक, सुप्रसिद्ध लेखक कवि पं. जुगलकिशोर मुख्तार हैं। आपकी यह रचना जन-जन का कण्ठहार बन गयी है। इसकी अभी तक करोड़ों प्रतियाँ छप चुकी हैं। अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती, मराठी, कन्नड़ आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। अनेक विद्यालयों, अस्पतालों, कारखानों, बंदीगृहों इत्यादि स्थानों में प्रतिदिन इसका पाठ होता है।

सुप्रसिद्ध लेखक कवि पं. जुगलकिशोर मुख्तार

जिसने रागद्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो॥ 1॥

- मेरी भावना में हमारा अपना जीवन्त जीवनशास्त्र है। जीवन की आचार संहिता है। इसमें केवल जैन-दर्शन का सार नहीं है, अपितु दुनियाँ के सभी धर्मों का नवनीत समाहित है।
- यह रचना भाईचारे और साम्प्रदायिक सहिष्णुता का पैगाम है। राष्ट्रीय चरित्र का शिलालेख है।
- मेरी भावना देश के विकास की इकाई के रूप में गाया गया एक मंगलगान है।
- मेरी भावना सभी धर्मों के पुराणों के प्रथम पृष्ठ पर लिखा जाने वाला मंगलाचरण है। यह जाति/धर्म/देश/समाज और भाषा की सीमा से उन्मुक्त, मनुष्य की मनुष्यता का गौरवगान है।

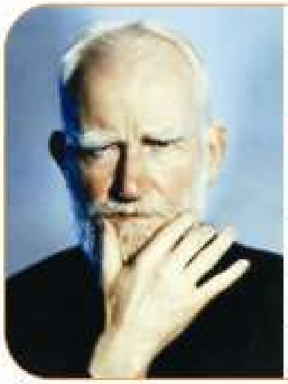

हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादक गाँधीजी के सुपुत्र देवदासजी गाँधी द्वारा इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध विचारशील लेखक जार्ज बर्नाड शा से पूछा गया प्रश्न - आपको सबसे प्रिय धर्म कौन-सा प्रतीत होता है। उत्तर - जैन धर्म। पुनः प्रश्न- इसका क्या कारण है? उत्तर - जैन धर्म में आत्मा की पूर्ण उन्नति तथा पूर्ण विकास की प्रक्रिया बतायी गयी है। इस कारण मुझे जैन धर्म सबसे प्रिय है।

# 8 भारत की प्राचीन भाषा : प्राकृत

मूल मंत्र : णमोकार

**णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।**
**णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं॥**

- प्राकृत एक लोकभाषा है। अत: इसका अस्तित्त्व उतना ही पुराना है, जितना कि लोक।
- प्राक्-कृत = प्राकृत-पुराकाल से प्राचीन जनभाषाओं को प्राकृत कहते हैं। संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत का क्षेत्र व काल विस्तृत रहा है। तीर्थंकर जैसे दिव्य पुरुषों ने जन-जन की समझ में आने वाली जनभाषा के द्वारा ही जगत् में धर्म की गंगा प्रवाहित की है।
- वैदिक सम्प्रदाय ने केवल संस्कृत भाषा को अपनाया, अत: किसी भी वैदिक विद्वान् का बनाया हुआ कोई प्राकृत भाषा का ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होता, किन्तु जैन सम्प्रदाय ने किसी भी भाषा से अरुचि प्रकट नहीं की। अतएव जैन विद्वानों ने भारतीय मूल भाषा प्राकृत में भी विपुल एवं महत्त्वपूर्ण साहित्य की रचना की तथा संस्कृत भाषा में भी व्याकरण, साहित्य, तर्क, छन्द, अलंकार, कोश, वैद्यक, ज्योतिष, गणित आदि समस्त विषयों पर अनुपम ग्रन्थों की रचना की।
- काल और क्षेत्र के परिवर्तन से प्राकृत भाषा के भी अनेक रूप हो गए, जिन्हें भाषा-विज्ञानी शौरसेनी, महाराष्ट्री, अर्द्धमागधी, पाली, पैशाची, अपभ्रंश, शिलालेखी व निया प्राकृत आदि कहते हैं।
- पुरा साहित्य की प्रकृति, पुराकालीन धर्म, दर्शन तथा जीवन पद्धति को समझने के लिए प्राकृत को समझना आवश्यक है।

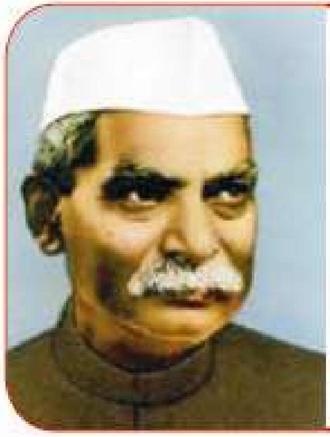

प्राकृत भाषा के अभ्यास के बिना
भारत के इतिहास का ज्ञान अधूरा है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
भारत के प्रथम राष्ट्रपति

# 9 भारत सरकार द्वारा जारी जैन सिक्के

भारत सरकार समय-समय पर विभिन्न मूल्यों के स्मारक और चलन वाले सिक्के जारी करती है। भगवान् महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव पर 2001 में सरकार द्वारा 100 रुपये का स्मारक और 5 रुपये का चलन सिक्का जारी किया गया था तथा नेपाल सरकार द्वारा 250 रुपये का चाँदी का सिक्का जारी किया गया था। इसी अवसर पर पंजाब सरकार ने 10 ग्राम शुद्ध सोने और 50 ग्राम शुद्ध चाँदी का स्मारक सिक्का जारी किया था।

भारत सरकार द्वारा जारी 100 रुपये का स्मारक सिक्का

भारत सरकार द्वारा जारी 5 रुपये का चलन सिक्का

नेपाल सरकार द्वारा जारी 250 रुपये का चाँदी का सिक्का

पंजाब सरकार द्वारा जारी 10 ग्राम का शुद्ध सोने का स्मारक सिक्का

पंजाब सरकार द्वारा जारी 50 ग्राम का शुद्ध चाँदी का स्मारक सिक्का

साभार : सुधीर जैन, सतना

10

# राष्ट्रगान में जैन

- राष्ट्रगान से सभी लोग परिचित हैं और उसे सम्मान पूर्वक गाते भी हैं, परन्तु इस राष्ट्रगान के दूसरे पद की दूसरी पंक्ति में 'जैन' शब्द को भारत में प्रचलित अन्य छह मुख्य धर्मों की भाँति लिया गया है। इसका बहुत कम लोगों को पता होगा। यहाँ राष्ट्रगान के उसी अन्तरे को प्रस्तुत किया जा रहा है।

(2)

अहरह तव आह्वान प्रचारित, शुनि तव उदार वाणी,
हिन्दु बौद्ध सिख जैन पारसिक, मुसलमान ख्रिष्तानी।
पूरब पश्चिम आसे तव सिंहासन पाशे,
प्रेमहार हय गाथा।
जन-गण-ऐक्य-विधायक जय हे, भारत-भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।

- नोबल पुरस्कार विजेता श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित और संगीतबद्ध 'जन-गण-मन' 5 पदों में सर्वप्रथम 27 दिसम्बर, 1911 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गाया था तथा राष्ट्रगान के रूप में 24 जनवरी, 1950 को अपनाया गया।
- राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी इस गान को एक भजन मानते थे।

# 11 श्रमण संस्कृति के उन्नायक चा. च. आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज

- शाश्वत श्रमण संस्कृति ने अपने प्रवाह में अनेक उतार-चढ़ाव का अनुभव किया। भगवान महावीर के मोक्ष गमन के बाद अनेक जैनाचार्यों, श्रमणों ने इसे आगे बढ़ाया। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में तात्कालिक परिस्थितियों एवं धार्मिक सत्तावरोध के कारण दिगम्बर जैन श्रमणों की संख्या में अत्यन्त कमी हुई। कतिपय श्रमण सीमित क्षेत्र में रहकर आत्म साधना करते रहे। श्रमण चर्या शिथिलाचार से युक्त हो गई थी, ऐसे समय में दक्षिण भारत की माटी ने सिंहवृत्ति वाले ऐसे श्रमण को जन्म दिया, जिन्हें सभी चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज के नाम से जानते हैं, उनके चरणों में नतमस्तक होते हैं।
- सन् 1872 में महाराष्ट्र प्रान्त के येलगुल ग्राम में जन्मे बालक सातगौड़ा ने सन् 1920 में दिगम्बरत्व का बाना धारण किया एवं कठोर मुनिचर्या का निर्दोष रीति से पालन करते हुए सम्पूर्ण भारत में कदम-कदम विहार किया। आचार्यश्री की प्रभावना यात्रा से देशवासियों एवं जैन धर्मावलम्बियों में सत्य-अहिंसा के प्रति आस्था एवं सामाजिक चेतना का विकास हुआ।
- आपने अपने 35 वर्षीय मुनि जीवन में सिंहनिष्क्रीड़ित आदि कठोर व्रतों को धारण करते हुए लगभग 10,000 निर्जल उपवास किए तथा आत्म साधना के विकास हेतु लगातार 16-16 दिन के उपवास भी तीन बार किए थे।
- जैन मंदिरों एवं संस्कृति की पवित्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु 1105 दिन तक अन्न का त्याग किया था।
- ताड़पत्रों में उत्कीरित ग्रन्थों को दीर्घकालीन सुरक्षा मिले, इस उद्देश्य को लेकर आपकी प्रेरणा से षट्खण्डागम आदि सिद्धान्त ग्रन्थों का ताम्रपत्रों में उत्कीर्णन करवाया गया।
- कोल्हापुर के नरेश ने आपके वचनों का आदर करते हुए बालविवाह प्रतिबंधक कानून बनाया।
- नेत्र ज्योति कमजोर होने पर आपने रत्नत्रय धर्म की रक्षा हेतु सल्लेखना व्रत धारण कर 36 दिनों में इस नश्वर देह का विसर्जन सन् 1955 में कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर किया।

# महान् शिक्षा प्रसारक

# क्षुल्लक श्री गणेशप्रसादजी वर्णी

- 20 शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जैन समाज एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र में शिक्षा के प्रचारक-प्रसारक, निर्भीक, दृढ़निश्चयी, कुरीतियों के विरोधी, सामाजिक -सौहार्द के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने वाले महापुरुष थे पूज्य गणेश प्रसादजी वर्णी। इनकी समग्र जीवन गाथा आज भी जन-जन के लिए प्रेरक है।
- आपका व्यक्तित्व भारत के शैक्षिक एवं सामाजिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किए जाने योग्य है।
- वर्णीजी का जन्म सन् 1874 में उत्तरप्रदेश में ललितपुर जिला अन्तर्गत हंसेरा ग्राम में एक वैष्णव परिवार में हुआ। आपकी धर्ममाता चिरोंजाबाई थीं। वे बहुत धर्मात्मा और त्याग की मूर्ति थीं।
- आपकी जैनधर्म में श्रद्धा का कारण महामन्त्र णमोकार था, क्योंकि णमोकार मन्त्र ने उन्हें बड़ी-बड़ी आपत्तियों से बचाया था तथा आपने पद्मपुराण ग्रन्थ से प्रभावित होकर रात्रिभोजन का त्याग किया।
- आपने 1947 में जैन श्रावक के उत्कृष्ट व्रत स्वरूप ग्यारह प्रतिमा ( क्षुल्लक दीक्षा ) धारण की थी।
- आपने अपने सम्यक् पुरुषार्थ से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में जैन विद्या सम्बन्धी पाठ्यक्रम प्रारम्भ कराया था।
- जबलपुर में हो रही आमसभा में आजादी के पुजारियों की सहायतार्थ आपने अपनी चादर समर्पित की थी। इस चादर से उसी क्षण तीन हजार रुपये की मिली राशि ने सभा को आश्चर्यचकित कर दिया।
- वर्णी जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से सैंकड़ों पाठशालाएँ, विद्यालय और महाविद्यालय खुले। वर्तमान में जितने भी विद्वान् देखे जाते हैं, वह उनके अज्ञान अन्धकार मिटाने के प्रयास का सुफल है।
- विनोबा भावे ने वर्णीजी को अपना अग्रज माना और उनके चरण स्पर्श किए और अनेक बार सान्निध्य प्राप्त किया।
- वर्णी जी ने 5 सितम्बर, 1961 को ईसरी में सल्लेखना पूर्वक देह का त्याग किया।

# 13 विनोबा भावे पर जैनधर्म का प्रभाव

## ( 1895-1982 )

- आचार्य विनोबा भावे जैन-दर्शन की सल्लेखना के महत्त्व से परिचित थे। भगवान् महावीर स्वामी के 2500 वें निर्वाण महोत्सव वर्ष में बाबा को चिन्ता हुई कि जैनधर्म का साहित्य विपुल और विशाल है और तीर्थंकरों की वाणी प्राकृत भाषा में निबद्ध है और जैन दर्शन का सार प्रस्तुत करने वाला कोई प्रतिनिधि ग्रन्थ नहीं है, उन्होंने प्रेरणा देकर समणसुत्तं का सृजन कराया। श्री विनोबा भावे ने समणसुत्तं की भूमिका में लिखा है -

  ''मेरे जीवन में मुझे अनेक समाधान प्राप्त हुए हैं। उनमें आखिरी, अन्तिम समाधान, जो शायद सर्वोत्तम समाधान है, इसी साल प्राप्त हुआ। मैंने कई बार जैनों से प्रार्थना की थी कि जैसे वैदिक धर्म का सार गीता में सात सौ श्लोकों में मिल गया है, बौद्धों का धम्मपद में मिल गया है, जिसके कारण ढाई हजार साल के बाद भी बुद्ध का धर्म लोगों को मालूम होता है वैसे जैनों का होना चाहिए। आखिर वर्णीजी नाम का एक बेवकूफ निकला और बाबा की बात उसको जँच गई।''

- समणसुत्तं उसी की सुखद परिणति है। समणसुत्तं में एक अध्याय सल्लेखना के नाम से है। फिर बाबा लिखते हैं-

  ''यह बहुत बड़ा कार्य हुआ है, जो हजार-पन्द्रह सौ साल में नहीं हुआ था। उसका निमित्त-मात्र बाबा बना, लेकिन बाबा को पूरा विश्वास है कि यह भगवान् महावीर की कृपा है।'' मैं कबूल करता हूँ कि मुझ पर गीता का गहरा असर है। उस गीता को छोड़कर महावीर से बढ़कर किसी का असर मेरे चित्त पर नहीं है। उसका कारण यह है कि महावीर ने जो आज्ञा दी है वह बाबा को पूर्ण मान्य है।

- स्पष्ट है कि महावीर के वचनों पर बाबा को पूर्ण आस्था थी और महावीर भगवान् ने सल्लेखना को श्रमण साधना का चरम उत्कर्ष बताया है। बाबा ने भी उसे साकार कर दिखाया। बाबा ने सल्लेखना समाधिमरणरत श्रमणों के दर्शन भी किए थे।

संदर्भ : समणसुत्तं की भूमिका : आचार्य विनोबा भावे

# 14 दान चिन्तामणि : एक श्रेष्ठ कृति

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो. जी. ब्रह्मप्पा ने कर्नाटक की शान महासती अत्तिमब्बे पर कन्नड़ भाषा में दान चिन्तामणि उपन्यास 1965 में लिखा था, उसी समय मैसूर विश्वविद्यालय ने इसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके पुरस्कृत किया। अगले वर्ष एम. के. भारती रमणाचार्य ने राष्ट्र भाषा में अनुवाद करके यह उपन्यास हिन्दी पाठकों को उपलब्ध कराया।

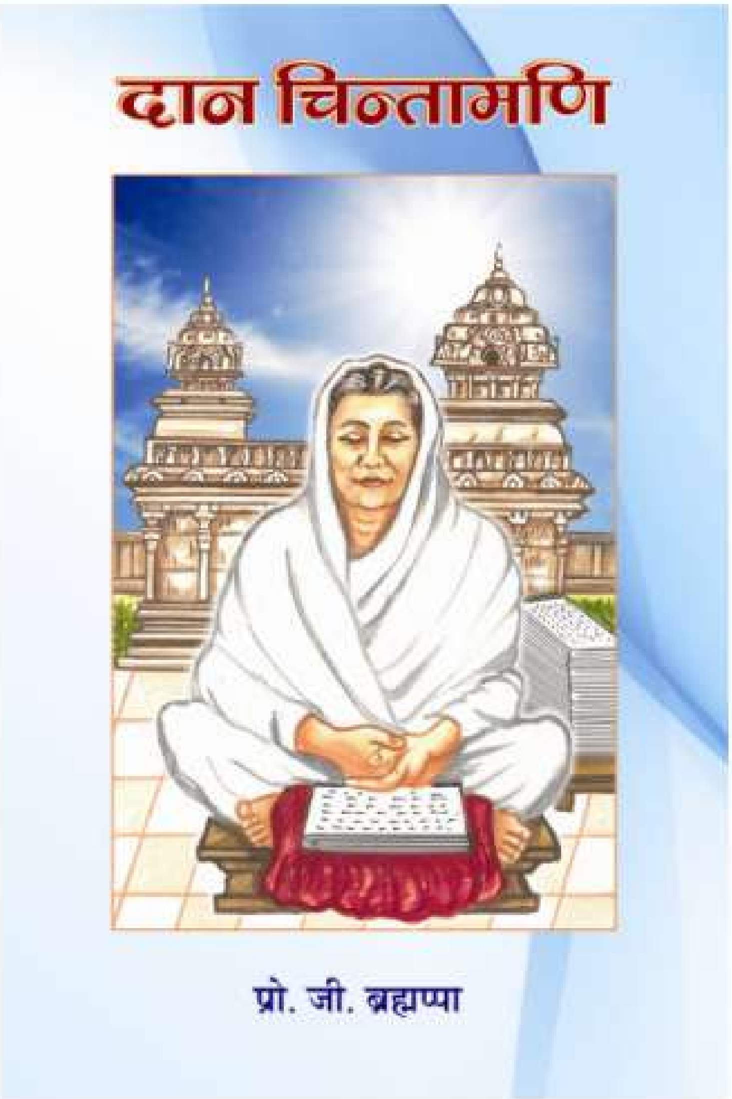


- इस दान चिन्तामणि में महासती अत्तिमब्बे की दानशीलता के सैंकड़ों उदाहरण हैं।
- कल्याणी के उत्तरवर्ती चालुक्यों के वंश एवं साम्राज्य की स्थापना में जिन धर्मात्माओं के पुण्य, आशीर्वाद और सद्‌भावनाओं का योग रहा उनमें सर्वोपरि महासती अत्तिमब्बे थीं, जिनके शील,

आचरण, धार्मिकता, धर्म प्रभावना, साहित्यसेवा, वैदुष्य, पातिव्रत्य, दानशीलता आदि सद्‌गुणों के उत्कृष्ट आदर्श से तैलप आहवमल्ल का शासनकाल धन्य हुआ।

- इस साम्राज्य के प्रधान सेनापति मल्लप की वह सुपुत्री थीं। वाजीवंशीय प्रधानामात्य मन्त्रीश्वर धल्ल की वह पुत्रवधु थीं। प्रचण्ड महादण्डनायक वीर नागदेव की वह प्रिय पत्नी थीं और कुशल प्रशासनाधिकारी वीर पदुवेल तैल की स्वनामधन्या जननी थीं।
- उत्तम संस्कारों में पली, दिगम्बर गुरुओं का मार्गदर्शन लेकर महासती अत्तिमब्बे ने परोपकार और जिनशासन की सेवा करने का संकल्प लिया था। उस महासती ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण और परिवार की सम्पदा का कण-कण परोपकार में लगा दिया, उसकी प्रकृति इतनी कोमल थी कि वह किसी को दुखी नहीं देख सकती थी, उनकी कृपा जैन और जैनेतर, छोटे-बड़े सभी पर समान रूप से बरसती थी।
- स्वर्ण एवं मणि-माणिक्यादि महर्घ्य रत्नों की 1500 जिन प्रतिमाएँ बनवाकर उन्होंने विभिन्न मंदिरों में प्रतिष्ठाापित की थीं, अनेक जिनालयों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार कराया था और आहार-अभय-औषध-विद्या रूप चार प्रकार का दान अनवरत देती रहने के कारण वह दान चिन्तामणि कहलायी थी।
- वह महान् महिला प्रत्येक दम्पति को एक तीर्थंकर प्रतिमा भेंट करके उनसे कहती- नित्य जिनदर्शन करना और किसी एक ग्रन्थ की पाँच प्रतियाँ करवाकर जिनालयों में स्थापित करना। जिनधर्म की अतिशय प्रभावना करने के कारण महासती अत्तिमब्बे को कर्नाटक माता के नाम से ख्याति प्राप्त हुई। उनका चरित्र पुराणों में अंकित हुआ। उन महिमामयी श्राविका की धर्मोपासना प्रणम्य है और आज भी प्रेरणादायक है।
- महासती अत्तिमब्बे ने चाँदी की नकेल और सोने की सींग वाली एक हजार अच्छी-अच्छी गाभिन गायों को गरीब गर्भवती महिलाओं को दान किया।
- महासती अत्तिमब्बे की एक इच्छा थी कि एक हजार जिन-मुनियों को एक छत के नीचे एक साथ आहार दान दें। हजार से भी अधिक मुनियों को एक ही छप्पर के नीचे शास्त्रोक्त विधि से आहार दान दिया। वह कितना अद्‌भुत दृश्य रहा होगा।
- उभयभाषा चक्रवर्ती महाकवि पोन्न के शान्तिपुराण (कन्नड़ी) की स्वद्रव्य से एक सहस्र प्रतियाँ लिखवाकर अत्तिमब्बे ने विभिन्न शास्त्रभण्डारों आदि में वितरित की थीं। स्वयं सम्राट् एवं युवराज की इस देवी के धर्म कार्यों में अनुमति, सहायता एवं प्रसन्नता थी। सर्वत्र उसका अप्रतिम सम्मान और प्रतिष्ठा थी।
- डॉ. भास्कर आनन्द सालतोर के शब्दों में - जैन इतिहास के महिला जगत् में सर्वाधिक प्रतिष्ठित प्रशंसित नाम अत्तिमब्बे है।
- अत्तिमब्बे को जिन जननी के समकक्ष माना है। 'बुधजन वंदिता'! 'कविवर कामधेनु'! 'चक्रवर्ती-पूजिता'! 'जिनशासन प्रदीपिका'! 'दानचिन्तामणि'! 'विनय चूड़ामणि'! 'सम्यक्त्व शिरोमणि'! 'शीलालंकृता'! 'गुणमालालंकृता'! आदि उपाधियों से अलंकृत किया था।

15

# अभिनव महाकाव्य
# मूकमाटी

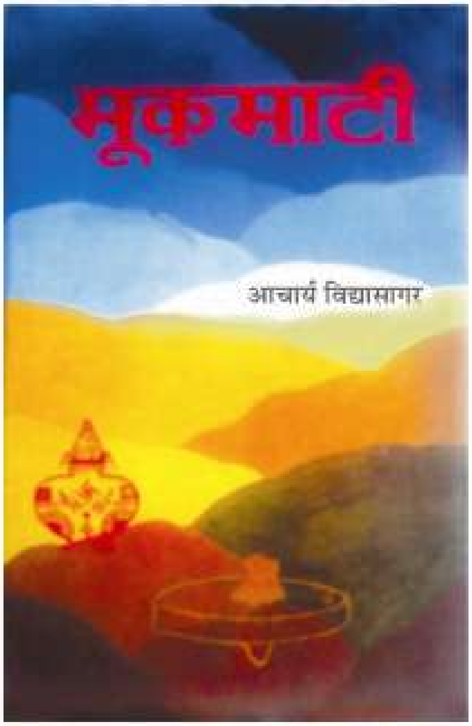


- मूकमाटी अपने आप में अद्वितीय अभिनव महाकाव्य है। चारों पुरुषार्थ का अवबोध कराने वाली इस मूकमाटी की काया में जीवन के चारों पन दिखाई देते हैं तो भाषा में चारों वेद और भासना में चारों अनुयोगों का ज्ञान झलकता है।
- समीचीन तत्त्व का प्रतिपादन करने वाली यह कृति निश्चित ही भौतिकवादी चकाचौंध में उलझी, लक्ष्यहीन दौड़ में भागती हुई दुनिया के लिए जन्म-जरा-मृत्यु रूपी रोग से छुटकारा दिलाने वाली परम औषध के समान हितकारी है।
- पतित से पावन, पापात्मा से परमात्मा बनने तक की सम्पूर्ण यात्रा, मार्ग की बाधाएँ, उन्हें पार करने की कला, एक माटी से घट बनने की प्रक्रिया को रूपक बनाकर यहाँ प्रस्तुत किया गया है।
- मातृभाषा कन्नड़ होते हुए भी इस प्रकार के उत्कृष्ट महाकाव्य की रचना करना आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की यह अपनी विशेषता ही मानी जायेगी, जो अन्यत्र दुर्लभ है।
- यह अनुपम अलौकिक कृति वर्तमान युग में सर्वाधिक लोकप्रिय और चर्चित है। तभी तो मूकमाटी महाकाव्य पर अब तक लगभग 4 डी. लिट्, 22 पी-एच. डी., 7 एम. फिल के शोध प्रबन्ध तथा 2 एम. एड. और 6 एम. ए. के लघु शोध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं।
- प्रस्तुत महाकाव्य चार खण्डों में विभाजित है - 1. संकर नहीं : वर्ण लाभ, 2. शब्द सो बोध नहीं : बोध सो शोध नहीं, 3. पुण्य का पालन : पाप प्रक्षालन, 4. अग्नि की परीक्षा : चाँदी सी राख।
- मूकमाटी महाकाव्य अंग्रेजी, बंगला, कन्नड़, मराठी में अनुवादित हो चुका है तथा इस महाकाव्य पर सम्पूर्ण भारत के लगभग 300 समालोचकों ने विभिन्न पक्षों पर अपनी कलम चलायी, जिनका संकलन मूकमाटी मीमांसा के नाम से भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा तीन खण्डों में प्रकाशित है।

राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल को दार्शनिक श्रमण दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा लिखित लोकविश्रुत कालजयी हिन्दी महाकाव्य **'मूकमाटी'** के अंग्रेजी अनुवाद 'दि साइलेंट अर्थ' की प्रथम प्रति लोकार्पण हेतु भेंट करते हुए प्रबुद्ध जन।

# 16 अद्भुत ग्रन्थ : विद्याष्टकम्

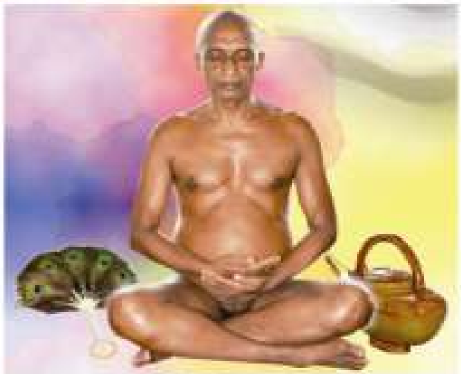

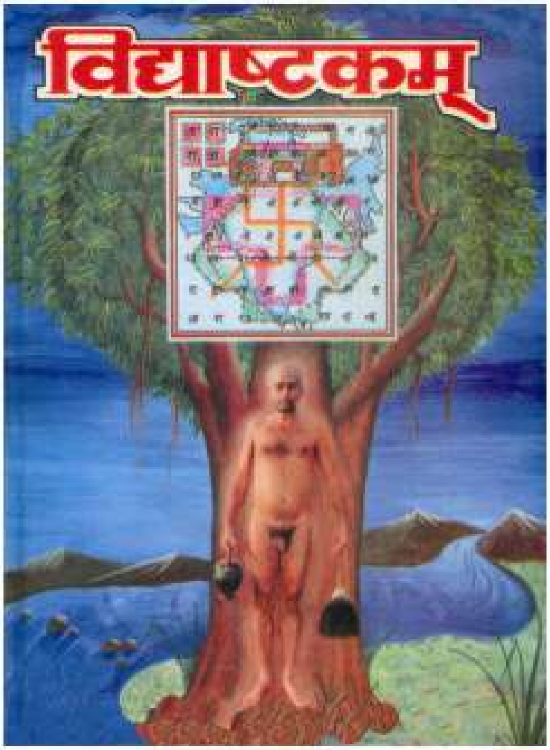


- विद्याष्टकम् युगश्रेष्ठ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की स्तुतिपरक संस्कृत भाषा में लिपि-बद्ध एक अनूठा काव्य ग्रन्थ है।
- आचार्यश्री के अन्तेवासी शिष्य पूज्य मुनि श्री नियमसागरजी महाराज ने विश्व को दिगम्बर अवस्था की सुयोग्यता प्रदर्शित करते हुए जैन संस्कृति एवं धर्म पताका को चिरंजीवी करने हेतु सम्पूर्ण मानव जगत् पर करुणा कर इस कृति की रचना की है।
- विद्याष्टकम् में संस्कृत की सबसे क्लिष्ट विधा चित्रालंकार तथा उसमें में भी अत्यन्त गूढ़ सर्वतोभद्र बंध में मूल काव्य की रचना की गयी। इस कृति में केवल 8 अक्षर एवं तीन मात्राओं का ही उपयोग किया गया।
- प्रथम श्लोक इस प्रकार है -

  वाराधारर धारावा, राक्षलाक्ष क्षलाक्षरा।
  धालायनो नोयलाधा रक्षनोऽज्ञ ज्ञनोऽक्षर॥

  शेष सात काव्य विभिन्न बन्धों के द्वारा इसी एक काव्य में से निकाले गए हैं।
- सर्वतोभद्र बंध में काव्य सृजन संस्कृत साहित्य के इतिहास में मात्र दो ही कृतियों में मिलता है। सर्वप्रथम आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैनाचार्य श्री समन्तभद्रस्वामी ने 'जिनस्तुति शतक' में सर्वतोभद्र बंध में श्लोक लिखा था। उसके बाद एक मात्र मुनिश्री ही ऐसे हैं, जिन्होंने विद्याष्टकम् में इस बंध को सृजन का माध्यम बनाया।
- विद्याष्टकम् ग्रन्थ का सम्पादन विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व कुलपति मूर्धन्य विद्वान् डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर द्वारा किया गया।
- 1995 में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा विमोचन किया गया।
- कृति का हिन्दी पद्यानुवाद स्व. ऐलक श्री सम्यक्त्वसागरजी महाराज द्वारा किया गया।
- भक्ति के शिखर पर दैदीप्यमान कृति विद्याष्टकम् आधुनिक युग की अनन्यतम कृति है।

# 17 विश्व कोशों की परम्परा में अद्वितीय जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश

- जैन दर्शन के प्रखर तत्त्ववेत्ता क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी द्वारा पाँच भागों में लिखित-संकलित जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश की रचना की गई।
- शब्दकोश एवं विश्व कोशों की परम्परा में एक अपूर्व एवं विशिष्ट कृति है।
- इसमें जैन तत्त्व का ज्ञान, आचार शास्त्र, कर्मसिद्धान्त, खगोल-भूगोल, पौराणिक चरित्र, ऐतिहासिक व्यक्ति, राजपुरुष, आगम, शास्त्र व शास्त्रकार, धार्मिक एवं दार्शनिक सम्प्रदाय आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित छह हजार से अधिक शब्दों का सांगोपांग वर्णन, आचार्यों द्वारा रचित मूल ग्रन्थों के संदर्भों, उद्धरणों तथा उनके हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है।
- इस कोश की एक विलक्षण विशेषता यह भी है कि विषय के भेद-प्रभेदों, करणानुयोग के विभिन्न विषयों तथा भूगोल से सम्बन्धित विषयों को रेखाचित्रों और सारणियों द्वारा सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- जैन शास्त्रों में प्रयुक्त किसी भी पारिभाषिक शब्द का अर्थ एवं विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए हम इसका प्रयोग कर सकते हैं।
- शब्दों के अनुक्रमानुसार ही इन्हें चार भागों में विभक्त किया गया है। पाँचवाँ भाग शब्दानुक्रमणिका (इण्डेक्स) के रूप में संकलित है। अकारादि क्रम से अन्वेषणीय शब्द चारों भागों में निम्नानुसार व्यस्थित हैं।

  भाग-1 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः।

  भाग-2 - क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ण, त, थ, द, ध, न।

  भाग-3 - प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व।

  भाग-4 - श, स, ष, ह।

# 18 जैनगीता : समणसुत्तं

जैनधर्म के विभिन्न ग्रन्थों से ग्रहण की गई गाथाओं का संकलन समणसुत्तं के नाम से क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी द्वारा किया गया था। इस ग्रन्थ की रचना को भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण-वर्ष के अवसर पर एक बड़ी उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया गया। आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा के फलस्वरूप दिनांक 29-30 नवम्बर, 1974 को दिल्ली में वाचना हुई, जिसमें ग्रन्थ का पारायण किया गया।

- ग्रन्थ के पारायण के लिए चार बैठक हुईं, जिसमें चारों बैठकों को आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज, आचार्यश्री तुलसीजी, आचार्य श्री विजय समुद्रसूरिजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।
- चारों बैठकों की अध्यक्षता चारों आम्नायों के प्रमुख उपाध्याय मुनि श्री विद्यानंदजी, मुनि श्री सुशीलकुमारजी, मुनि श्री नथमलजी एवं मुनि श्री जनकविजय जी ने की।
- जैनधर्म के सभी सम्प्रदायों के मुनियों तथा श्रावकों का यह सम्मिलन विगत 2000 वर्षों के पश्चात् पहली बार देखने में आया था।
- 'श्रमण-सूक्तम्'- जिसे अर्धमागधी में समणसुत्तं कहते हैं। इसमें 756 गाथाएँ हैं। 7 का आंकड़ा जैनों को बहुत प्रिय है। 7 और 108 को गुणा करने पर 756 बनता है। सर्वसम्मति से इतनी गाथाएँ लीं। इस ग्रन्थ में चार खण्ड हैं -1. ज्योतिर्मुख, 2. मोक्षमार्ग, 3. तत्त्वदर्शन, 4. स्याद्वाद। इसमें 44 प्रकरण हैं।

- इसमें जैनधर्म और दर्शन के सभी महत्त्वपूर्ण विषयों को एक ही ग्रन्थ में उपलब्धि होने से आचार्य विनोबा भावे ने समणसुत्तं ग्रन्थ को जैनधर्म का सार माना है। जिस प्रकार अन्य धर्मों के बाइबिल, गीता, कुरान आदि ग्रन्थ हैं, उसी प्रकार जैनों का समणसुत्तं है।
- श्रमण शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने इसका पद्यानुवाद 'जैन गीता' के रूप में करके इसे सरल सुग्राह्य बनाया है। पं. कैलाशचन्दजी सिद्धान्ताचार्य ने इस ग्रन्थ का गद्यानुवाद किया है। अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करने का श्रेय श्री दशरथलालजी जैन, छतरपुर, पूर्व गृहमंत्री विंध्यप्रदेश ने प्राप्त किया है।

# 19 जैन आयुर्वेद ग्रन्थ : कल्याणकारकम्

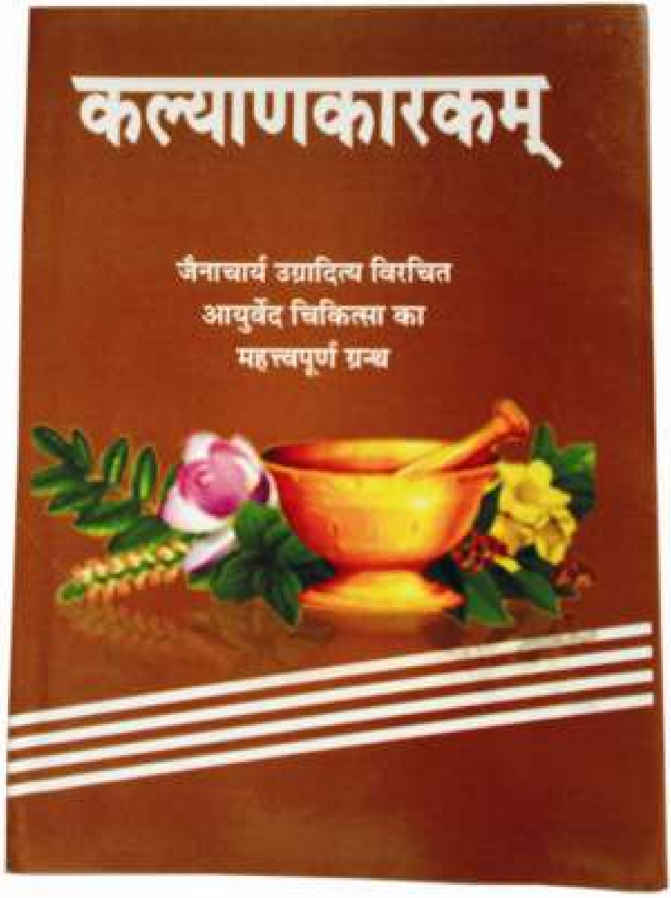


- तीर्थंकरों द्वारा उपदेशित द्वादशांग रूप शास्त्र के उत्तर भेद प्राणावाय पूर्व ही आयुर्वेद शास्त्रों का मूल स्रोत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में विस्तार से अष्टांगायुर्वेद का वर्णन है।
- 8-9 वीं शताब्दी में जैनाचार्य उग्रादित्य ने कल्याणकारकम् नामक महान् आयुर्वेद ग्रन्थ की रचना की थी। जो आज प्रकाशित होकर हमारे पास उपलब्ध है।
- 'अहिंसा परमो धर्म:' के सिद्धान्त को सामने रखते हुए जैनाचार्यों ने मद्य, माँस, मधु के प्रयोग बिना ही केवल वनस्पति, खनिज और रत्नादिक पदार्थों का ही औषधि में उपयोग बताया है। वैद्यक ग्रन्थों का उद्देश्य शरीर स्वास्थ्य के साथ-साथ आत्मिक स्वस्थता को भी प्राप्त कराना रहा है। इसलिए जगह-जगह भक्ष्याभक्ष्य, सेव्य-असेव्य पदार्थों का विवेक रखने का भी आदेश ग्रन्थों में दिया है।
- कल्याणकारकम् ग्रन्थ में पच्चीस परिच्छेद हैं ( जिसमें आदिनाथ प्रभु से प्रार्थना, चिकित्सा के आधार, आयु परीक्षा, गर्भाधान क्रम, वात-पित्त-कफ के स्थान, लक्षण दोष इत्यादि ऋतुमान, भोजन, अन्न और वनस्पति आदि के गुण-दोष, पानी, दूध, दही, तेल, घी आदि के गुण-दोष, ब्रह्मचर्य के गुण, त्रिफला आदि रसायन ) तथा परिशिष्ट में अरिष्ट अध्याय भी दिया है। रिष्टाध्याय, हिताध्याय एवं वनौषधि शब्दादर्श है। इन वनौषधि शब्दादर्श में औषधियों के नाम संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़ भाषा में लिखे गए हैं।
- अपूर्व पाण्डित्य के धारी अनेक दिगम्बर जैनाचार्यों ने भी वैद्यक ग्रंथों की रचना की है। जैसे - पूज्यपाद ने शालाक्य शिलाभेदन, पात्रकेसरी ने शल्यतंत्र, सिद्धसेन ने विष की शमन विधि, मेघनाद आचार्य ने बाल रोगों की चिकित्सा, सिंहनाद आचार्य ने शरीर बलवर्द्धक प्रयोग, श्री समन्तभद्र आचार्य ने सिद्धान्त रसायन कल्प ग्रन्थ की रचना की।

20

# विदेशों में जैन मंदिर

भारत मात्र में ही नहीं सारे विश्व में तीर्थंकरों को पूजने की परम्परा रही है,यह यथार्थ है ऐसा इतिहास पढ़ने से भी ज्ञात होता है। वर्तमान काल में भी अनेक जैन बन्धु विदेशों में निवास कर रहे हैं तथा अपने आराध्य की आराधना के लिए उन्होंने जिनमंदिर आदि का निर्माण कराया है। जिनमें से कुछ के चित्र यहाँ प्रस्तुत हैं-

जैन सेन्टर, कैलीफोरनिया, सेन फांसिसिको (1973)

जैन सोसायटी, ग्रीटर डिटोरिट (1975)

जैन सेन्टर, न्यूयार्क (अमेरिका) (1976)

जैन सेन्टर, साऊथ कैलीफोरनिया (1979)

- कम्बोडिया तथा थाईलैंड में नागबुद्ध के नाम से पूजित सभी प्रतिमाएँ भगवान् पार्श्वनाथ की हैं।
- डॉ. गोकुलचंद जैन लिखते हैं कि - ''टर्की में भगवान् बाहुबली का 525 धनुष लंबा बिम्ब खंडित दशा में है।'' जिसका वर्णन आता है कि यह पोदनपुर में भगवान् बाहुबली के निर्वाण के बाद बनवाया गया था।
- अरब में बहुत से जैन मंदिरों के खंडहर हैं, जो देखने नहीं दिए जाते। फोटो लेना भी मना है।

जैन मंदिर, जापान

कोबे जैन मंदिर, जापान

जैन सेन्टर, बोस्टन

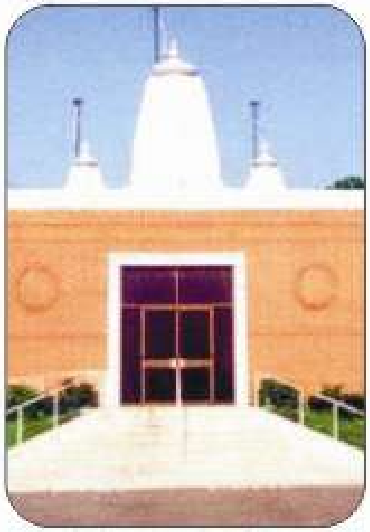

जैन सेन्टर, शिकागो ( अमेरिका )

जैन मंदिर, केन्या ( अफ्रीका )

जैन रिलीजन सोसायटी, सिंगापुर

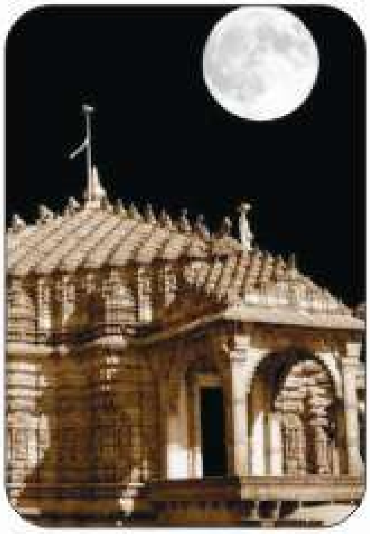

जैन टैम्पल, सिंगापुर

जैन टैम्पल, लंदन

जैन मंदिर, काठमांडू ( नेपाल )

# 21 तीर्थ शिरोमणि : श्री गिरनार जी

- गुजरात प्रांत के जूनागढ़ जिले में, अहमदाबाद से 327 किलोमीटर की दूरी पर श्री गिरनारजी सिद्धक्षेत्र में 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान् के दीक्षा, ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक हुए हैं।
- गिरनार पर्वत का प्राचीन नाम ऊर्जयन्त तथा रैवतक गिरि है। जूनागढ़ से इस पर्वत की ओर जाने वाले मार्ग पर ही वह इतिहास-प्रसिद्ध विशाल शिला मिलती है, जिस पर अशोक, रुद्रदमन और स्कन्धगुप्त सम्राटों के शिलालेख खुदे हुए हैं तथा लगभग 1000 वर्ष का इतिहास लिखा हुआ है।
- यह स्थान ऐतिहासिक व धार्मिक दोनों दृष्टियों से अतिप्राचीन व महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।
- इस तीर्थ का सर्वप्राचीन उल्लेख आचार्य कुन्दकुन्द रचित निर्वाणभक्ति ( प्रथम शता. ) में मिलता है।

  अट्ठावयम्मि उसहो, चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो।
  उज्जंते णेमिजिणो, पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥ 1 ॥

- यहीं पर श्री धरसेनाचार्य ने पुष्पदन्त एवं भूतबलि को अंगज्ञान का बोध कराया।
- भगवान् कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वामी, समन्तभद्र, वीरसेनाचार्य आदि बड़े-बड़े दिगम्बर जैनाचार्य गिरनार पर आकर रहे। दिगम्बर जैन शास्त्र कहते हैं कि - आचार्य कुन्दकुन्द ने गिरनार पर्वत पर स्थित सरस्वती देवी की मूर्ति से यह घोषणा कराई थी कि दिगम्बर मुद्रा आर्ष और प्राचीन है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चात् मौर्य सम्राटों में अशोक, सम्प्रति और सालिसूक गिरनार को भुला न सके। उन्होंने अहिंसा धर्म का प्रचार किया। सम्प्रति ने भगवान् नेमिनाथ का नयनाभिराम मंदिर बनवाया था।
- ऊपर तक पहुँचने के लिए पत्थरों से तराशी गई 10,000 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।
- यह वह पावन स्थली है, जिसमें नेमि-राजुल के प्रेम, विरह, वैराग्य तथा नेमिनाथ के कैवल्य और निर्वाण की अत्यन्त लोमहर्षक गाथायें जुड़ी हैं।
- सभी श्रद्धालु इस तीर्थ की पवित्र माटी को अपने शीर्ष पर चढ़ाने के लिए आते हैं।

# 22 ऐतिहासिक : सोनीजी की नसियाँ

- श्रद्धा के प्रतीक भगवान् ऋषभदेव मंदिर का निर्माण रायबहादुर सेठ मूलचन्द नेमीचन्द सोनी ने राजस्थान के हृदय अजमेर नगर में करवाया था। यह कार्य मूर्धन्य विद्वान् पं. सदासुखदासजी की देख-रेख में सम्पन्न हुआ था।
- इस मंदिर का नाम श्री सिद्धकूट चैत्यालय है, करौली के लाल पत्थर से निर्मित होने के कारण इसे लाल मंदिर तथा निर्माताओं के नाम से सम्बन्धित होने से सेठ मूलचन्द सोनी की नसियाँ या सोनी मंदिर भी कहते हैं।
- इस मंदिर में अयोध्यानगरी, सुमेरु पर्वत आदि की जो रचना है, वह सोने से मढ़ी हुई है, भवन में अत्यन्त आकर्षक चित्रकारी है, जो लोक तथा संसार में जीव की अवस्था का दिग्दर्शन कराती है।
- इस ऐतिहासिक मंदिर में प्रवेश करते ही अत्यन्त कलात्मक 82 फुट ऊँचे मानस्तम्भ के दर्शन होते हैं।
- प्रतिमा स्थापन के 5 वर्ष बाद सेठ मूलचन्द सोनी की भावना हुई कि भगवान् ऋषभदेव के पाँच कल्याणकों का मूर्त रूप में दृश्यांकन किया जाये। तदनुसार अयोध्यानगरी, सुमेरु पर्वत आदि की रचना का निर्माण कार्य जयपुर में हुआ और इसके बनने में 25 वर्ष लगे, समस्त रचना आदिपुराण के आधार पर बनायी गयी है तथा सोने के वर्कों से ढकी हुई है। कार्य पूरा होने पर सन् 1865 में जयपुर के म्यूजियम हाल में रचना के प्रदर्शन के लिए 10 दिन तक विशाल मेला लगा रहा। तत्कालीन जयपुर नरेश महाराजा माधोसिंह जी इसमें स्वयं पधारे थे।
- इस रचना को मंदिर के पीछे निर्मित विशाल भवन में सन् 1865 में स्थापित किया गया। भवन के अंदर का भाग सुंदर रंगों, अनुपम चित्रकारी एवं काँच की कला से सज्जित है।

# 23 अद्भुत स्तोत्र : भक्तामर

इस स्तोत्र का प्रारम्भ 'भक्त-अमर' शब्द से होता है, इसलिए इसका नाम भक्त+अमर=भक्तामर स्तोत्र सर्वप्रसिद्ध है। इसमें कुल 48 काव्य वसंततिलका छन्द में रचे गए हैं। आचार्य मानतुंग के समय के सम्बन्ध में दो विचारधाराएँ प्रचलित हैं- भोजकालीन और हर्षकालीन, किन्तु ऐतिहासिक विद्वान मानतुंग की स्थिति हर्षवर्धन के समय की मानते हैं। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ विद्वान् पं. नाथूराम प्रेमी ने हर्षकालीन माना है। इस कथन से भक्तामर स्तोत्र 7वीं शताब्दी की रचना है।

– जैन धर्म का प्राचीन इतिहास, भाग-2, पृ. 133

- विश्व के उत्कृष्टतम पाँच स्तोत्र में संस्कृत भाषा का भक्तामर स्तोत्र आता है। इसका वास्तविक नाम आदिनाथ स्तोत्र है। इस काव्य का प्रत्येक अक्षर एवं उसकी संयोजना अद्भुत मंत्र शक्ति को लिए हुए है।
- इस स्तोत्र में कामना नहीं है, यह तो निष्काम भक्ति का उत्कृष्टतम स्तोत्र है। एक स्वर से इसका पाठ करने से पर्यावरण शुद्ध होता है। इस स्तोत्र को चाहे जिन तीर्थंकर के सामने पढ़ा जाये, इसकी भाव-भासना में सभी तीर्थंकर की भक्ति है
- इस स्तोत्र के सर्वाधिक 124 पद्यानुवाद हुए हैं, जो कि हिन्दी, मराठी, गुजराती, मेवाड़ी, राजस्थानी, अवधी, बांग्ला, कन्नड़, तमिल के साथ-साथ उर्दू, फारसी एवं अंग्रेजी में भी उपलब्ध हैं। इनका संकलन 'भक्तामर भारती' के नाम से प्रकाशित है। पद्यानुवाद की अपेक्षा मूल रचना पढ़ना अधिक लाभकारी है।
- इस स्तोत्र को भक्तिभाव पूर्वक निरंतर पढ़ने से कर्म निर्जरा के साथ ही सभी प्रकार की विघ्न-बाधाएँ दूर होती हैं, मनवांछित कार्य सिद्ध होते हैं, जीवन सुख-शांतिमय बनता है।
- डॉ.श्रीमती मंजू जैन ने इस काव्य के 45 वें श्लोक और उसके मंत्र द्वारा लगभग 5 वर्षों के अपने प्रयोग को 20 केंसर रोगियों पर अपनाकर उन्हें रोग मुक्त किया। जिसका पूरा डाक्यूमेन्टेशन रिसर्च कार्य उन्होंने ओपन इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी मुम्बई में प्रस्तुत किया। 45 वें श्लोक '**जैनिज्म मेथड आफ क्यूरिंग विथ स्पेशल रेफरेन्स आफ भक्तामर**' पर उन्होंने पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

# 24 पावन पर्व : अक्षय तृतीया

सभी धर्म एवं सम्प्रदायों में वैशाख शुक्ल तीज का दिन अक्षय तृतीया पर्व के रूप में मनाया जाता है। यह दिन अत्यन्त पवित्र माना जाता है। ज्योतिष विद्वानों के अनुसार इस दिन को अत्यन्त शुभ मुहूर्त के रूप में स्वीकारा गया है। बिना किसी ज्योतिषी की सलाह के भी इस दिन सभी लौकिक अथवा धार्मिक कार्य प्रारम्भ किए जा सकते हैं। इस पर्व का प्रारम्भ युग के आदि में जन्मे प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ प्रभु तथा राजा सोम एवं राजा श्रेयांस से सम्बन्ध रखता है।

- श्रमण दीक्षा अंगीकार करने के बाद ऋषभदेव छह माह तक ध्यान में बैठे रहे। श्रावकों को दिगम्बर जैन मुनियों के आहार-दान विधि का ज्ञान न होने से उन्हें 7 माह, 13 दिन तक भी आहार का लाभ नहीं हुआ। हस्तिनापुर नगर में प्रभु के प्रवेश करते ही पूर्व भव की स्मृति ( जातिस्मरण ) हो आने पर राजा सोमप्रभ व श्रेयांशकुमार ने इसी दिन भक्ति भाव पूर्वक सर्वप्रथम इक्षुरस का आहार दिया था। जिसके फलस्वरूप देवों ने पंचाश्चर्य प्रकट कर इस दान की अनुमोदना की थी। जिससे यह वैशाख शुक्ल तीज की तिथि अक्षय तृतीया के रूप में प्रसिद्ध हुई।

25

# दक्षिण का सम्मेदशिखर
# मांगीतुंगी जी

- महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिला, सटाणा तहसील में स्थित यह पावन सिद्धक्षेत्र है, जहाँ से पुरुषोत्तम श्री राम, विद्याधर श्री हनुमान, श्री सुग्रीव, सुडील, गव, गवाक्ष, नील, महानील इत्यादि 99 करोड़ महामुनीश्वर मोक्ष पधारे। शास्त्रों में इसका नाम तुंगीगिरि आता है। यहाँ पहाड़ एक है- उसकी चोटियाँ दो हैं। मांगी और तुंगी इन दो शब्दों के नाम से इसका नाम मांगीतुंगी पड़ा।
- यह पहाड़ी क्षेत्र गालना हिल के नाम से प्रसिद्ध है। समुद्र सतह से मांगीगिरि की ऊँचाई 4343 फीट एवं तुंगीगिरि की ऊँचाई 4366 फीट है। मांगीगिरि पर 7 गुफाएँ एवं तुंगीगिरी पर 3 गुफाएँ हैं। यहाँ पर श्री कृष्णजी का अंतिम संस्कार हुआ था।
- पहाड़ की ओर मुख कर दुनिया की तरफ पीठ फेरकर बैठे बलभद्र जी की अतिप्राचीन एक मात्र प्रतिमा इसी क्षेत्र पर विराजित है, जिसके पीठ के ही दर्शन होते हैं।
- सती सीता की तपोभूमि यही है। यहीं से आर्यिका सीता जी ने स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग का प्रतीन्द्र पद प्राप्त किया था।
- पहाड़ की तलहटी में श्रीराम ( पद्म ), श्री हनुमान की मूर्ति के साथ-साथ 1121 मूर्तियाँ पाँच मंदिरों में विराजमान हैं।
- प्रतिवर्ष दीपावली के बाद की पूर्णिमा के दिन गाँव का कोई एक व्यक्ति दैवीय शक्ति से प्रेरित होकर मात्र एक धागे के सहारे से मांगी पर्वत की चोटी पर चढ़कर ध्वज स्थापित करता है।

# 26 श्री पिसनहारी मढ़िया तीर्थ

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै

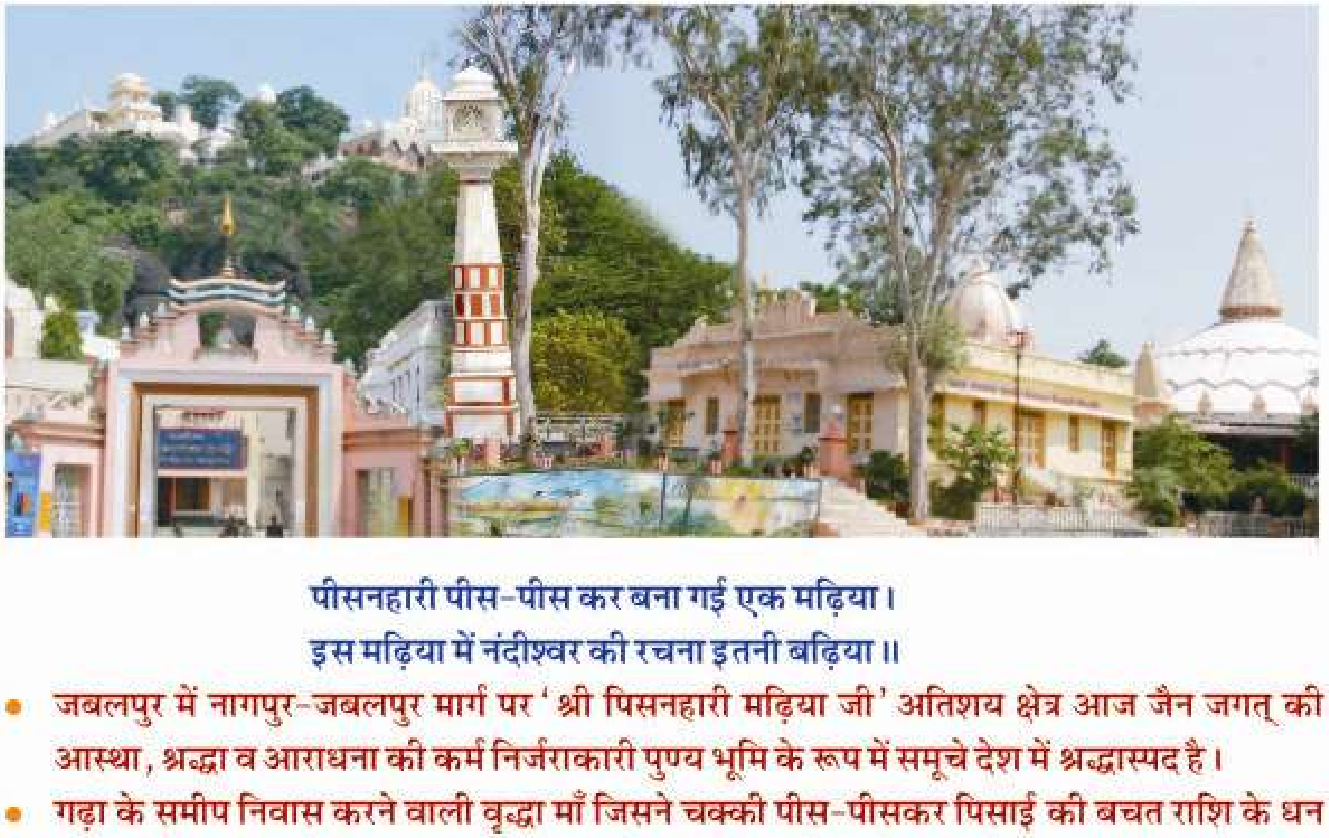

पीसनहारी पीस-पीस कर बना गई एक मढ़िया।
इस मढ़िया में नंदीश्वर की रचना इतनी बढ़िया ॥

- जबलपुर में नागपुर-जबलपुर मार्ग पर 'श्री पिसनहारी मढ़िया जी' अतिशय क्षेत्र आज जैन जगत् की आस्था, श्रद्धा व आराधना की कर्म निर्जराकारी पुण्य भूमि के रूप में समूचे देश में श्रद्धास्पद है।
- गढ़ा के समीप निवास करने वाली वृद्धा माँ जिसने चक्की पीस-पीसकर पिसाई की बचत राशि के धन से इसे बनवाया था। इसलिए इसके शिखर पर वृद्धा की चक्की के पाट लगाये गए हैं। कहते हैं-विश्व के किसी भी मंदिर के शिखर में श्रम का ऐसा शौर्य और सम्मान नहीं पाया जाता है।
- इसकी रचना भूभाग से लगभग 300 फीट की ऊँचाई पर श्यामल चट्टानी पर्वत शृंखलाओं के मध्य 650 वर्ष पूर्व गौड़ राज्य काल में हुई थी। राजा पेशवा भी इस क्षेत्र के दर्शन करने आते थे।
- कालान्तर में क्षुल्लक श्री 105 गणेशप्रसादजी वर्णी महाराज ने और इन तीन दशकों से जैन जगत् के श्रद्धा के मेरुदण्ड परम तपस्वी आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने पर्वतीय चट्टानों को अपनी शिक्षा-स्वाध्याय-संयम-साधना से इस क्षेत्र को देश के भव्य तीर्थराजों की संज्ञा में सुविख्यात कर दिया है।

# 27 विश्व की अद्वितीय रचना : जम्बूद्वीप

- असंख्यात द्वीप-समुद्रों के बीचोंबीच एक लाख योजन के विस्तार वाला जम्बूद्वीप है। इसके मध्य में सुमेरु पर्वत है तथा अनेक अकृत्रिम जिनालय, पर्वत, विदेह क्षेत्र, नदियाँ, तालाब, नगरादि भी इस द्वीप में हैं। जिनका वर्णन विस्तार से जैनागमों/ शास्त्रों में मिलता है। आगमानुसार उनकी संक्षिप्त प्रतिकृति की रचना पूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी के निर्देशन में की गई।
- हस्तिनापुर में स्थित जम्बूद्वीप विश्व की अद्वितीय रचना है। 300 फुट व्यास में निर्मित जम्बूद्वीप के बीचोंबीच 93 फुट ऊँचा सुमेरुपर्वत अति सुन्दर है।

# 28 विश्व क्षमा दिवस : क्षमावाणी पर्व

- जैन परम्परा में दशलक्षण पर्व की समाप्ति के ठीक एक दिन बाद एक विशेष पर्व मनाया जाता है, जिसे क्षमावाणी पर्व कहते हैं।
- विश्व के इतिहास में यह पहला पर्व है, जिसमें शुभकामना, बधाई, उपहार न देकर सभी जीवों से अपने द्वारा जाने-अनजाने में किए गए समस्त अपराधों के लिए क्षमा-याचना करते हैं।
- क्षमा करने और क्षमा माँगने के लिए विशाल हृदय की आवश्यकता होती है।
  तीर्थङ्करों ने सम्पूर्ण विश्व में शांति की स्थापना के लिए सूत्र दिया है-

  खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे।
  मेत्ती मे सव्वभूदेसु, वेरं मज्झं ण केण वि॥

  मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ। सभी जीव मुझे भी क्षमा करें। मेरी सभी जीवों से मैत्री है। किसी के साथ मेरा कोई वैर भाव नहीं है।
- अनुसंधानकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि लम्बे समय तक मन में बदले की भावना, ईर्ष्या-जलन और दूसरों के अहित का चिन्तन और प्रयास करने पर मनुष्य भावनात्मक रूप से बीमार रहने लगता है। क्षमा एक ऐसी अचूक औषधि है, जिसके द्वारा हम लम्बी बीमारियों से भी निजात पा सकते हैं।
- जिस प्रकार 2 अक्टूबर ( गाँधी जयंती ) को विश्व अहिंसा दिवस घोषित किया गया है, उसी प्रकार क्षमावाणी पर्व भी विश्व क्षमा दिवस या 'वर्ल्ड फारगिवनेस डे' के रूप में मनाया जाना चाहिए।

मेरे जीवन में जैन संस्कारों का गहरा असर है और मेरे ऊपर जैन मुनियों व आचार्यों की कृपा बनी हुई है। आज मैं यह घोषणा करता हूँ कि मेरे मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए मध्यप्रदेश की किसी भी आँगनवाड़ी में अण्डा नहीं परोसा जायेगा।

**शिवराज सिंह चौहान**
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश सरकार

प्रसंग : मुख्यमंत्री निवास पर पर्युषण के समापन पर आयोजित क्षमावाणी कार्यक्रम सन् 2010, उपस्थित मुख्यअतिथि-पूर्व मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा, नरेन्द्रसिंह तोमर, राघवजी, जयंत मलैया।

# 29 अमर शहीद : मोतीचंद जैन

- सोलापुर जिला के करकंब गाँव में सेठ पद्मसी के यहाँ ई.सन् 1890 में मोतीचंदजी का जन्म हुआ था। पिताजी का देहान्त होने पर वे अपने मामा, मौसी के यहाँ सोलापुर आए। वहीं आपका प्रारम्भिक अध्ययन हुआ।
- दुधनी गाँव से शिक्षा के लिए सोलापुर में आए बालचंददेवचंदजी ( मुनि श्री समन्तभद्र महाराज ) आपके परममित्र थे। आप दोनों ने कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर देशभूषण-कुलभूषण भगवान् के समक्ष आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया था।
- देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होकर सन् 1906 में आपने बालोत्तेजक समाज 'सोलापुर' की स्थापना तिलकजी के सान्निध्य में की थी।
- धर्म शिक्षा एवं राष्ट्रसेवा की भावना मन में लेकर आप देवचंद, बालचंद आदि साथियों के साथ जयपुर के पं. अर्जुनलालजी सेठी के पास पहुँचे।
- पं. अर्जुनलालजी भी क्रांतिकारी विचारधारा के थे। अंग्रेजों के सहयोगी समर्थन किसी महंत के हत्यारों की सहायता करने के दण्ड में आपको आरा कोर्ट ने फाँसी की सजा सुनाई। तब वन्दे मातरम् कहते हुए उन्होंने हँसते-हँसते सजा स्वीकार कर उत्तम समाधि साधना की।
- अंतिम इच्छा भगवान् के दर्शन की होने पर प्रात: 4 बजे ही गाँव के मंदिर से पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्ति जेल के कमरे में लाई गई, उत्कृष्ट भावों से उन्होंने भगवान् के दर्शन किए, सामायिक की और तत्त्वार्थसूत्र का पठन कर एकाग्रता से सामायिक पाठ का श्रवण किया तथा एक घंटे बाद मात्र 25 वर्ष की आयु में फाँसी लगा दी गई।
- आध्यात्मिक जागृति और सम्यग्ज्ञान का प्रतिफल रहा कि वे अन्त समय तक आकुल-व्याकुल नहीं रहे अपितु प्रसन्नता पूर्वक फाँसी के फन्दे पर झूल गए।
- कारागृह में रहते हुए उन्होंने अपने युवा मित्रों के लिए खून से पत्र लिखा था, जिसके कुछ बिन्दु इस प्रकार हैं -

1. जो हुआ सो हुआ और जो हुआ वह होने ही वाला था, परन्तु हमें ऐसी स्थिति में निराश होने का कोई कारण नहीं क्योंकि जिन्होंने अनंत चतुष्टय प्राप्त किया, जो अनिर्वचनीय आनंद में लीन हुए हैं, उन महान् पूर्वजों का और तेजस्वी आचार्यों का अभेद्य छत्र हमारे माथे पर है।
2. दिन और संकट बीत जाएँगे, लेकिन कृति हमेशा के लिए चिरंतन रहेगी। कर्तव्य दक्षता से काम करें तो स्वदेश की और जैनधर्म की उन्नति सर्वस्वरूप से अपने हाथ में ही है।
3. जैनधर्म की उन्नति के लिए हमें संकट सहने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए।
4. सिर्फ खुद का पेट भरने के लिए और परिवार के पोषण के लिए मैं विद्वान् बनूँ तो उस विद्वत्ता का क्या काम है ?
5. मैं जो कुछ सीखूँगा वह स्वधर्म के लिए ही, अमीर हुआ तो सिर्फ स्वधर्म के लिए, गरीब रह गया तो भी स्वधर्म के लिए ही, मैं जिऊँगा तो सिर्फ स्वधर्म के लिए और मरूँगा तो भी स्वधर्म की सेवा में।

# 30 भक्त-शिरोमणि : श्री पाड़ाशाह

भगवान् शांतिनाथ जी, अहारजी

- बुंदेलखण्ड में बहु प्रचलित किंवदन्तियों के अनुसार यहाँ 12वीं-13वीं शताब्दी के लगभग एक अग्रवाल जैन धनकुबेर हो गये हैं, जो भक्त-शिरोमणि, जैन-जगत् के गौरव श्री पाड़ाशाह के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप एक धर्मात्मा, इतिहास-पुरुष माने गये हैं।
- पाड़ों के व्यापार के कारण इन्हें पाड़ाशाह कहते थे। उस व्यापार से अर्जित अपार सम्पदा से अनेक जिनालयों का निर्माण कराकर जिनबिम्ब प्रतिष्ठित कराये।
- पाड़ाशाह तीर्थंकर शान्तिनाथ के परम भक्त थे, इसलिए उन्होंने जितनी भी मूर्ति बनवाई और प्रतिष्ठित कराई वे सब तीर्थंकर शान्तिनाथ की ही थीं।
- पाड़ाशाह ने अहारजी, बजरंगगढ़, खानपुर, झालरापाटन, थूवौनजी, मियादास, पचराई, सेरोन, पजनारी, ईशुरवारा आदि स्थानों पर जिनालयों का निर्माण कर शान्तिनाथ की कायोत्सर्ग मुद्रा में जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा करायी थी। ये सभी जिनबिम्ब हल्के लाल या कत्थई रंगी पाषाण के निर्मित हैं।
- आपके पास इतनी अपार धनराशि और वैभव/सम्पत्ति कैसे प्राप्त हुई, इस विषय में कई किंवदन्तियाँ विख्यात हैं। जैसे - जब पाड़ाशाह पाड़ों का झुण्ड लेकर बजरंगगढ़ जा रहे थे, तब मार्ग में उनका एक पाड़ा कहीं खो गया, जिसे ढूँढ़ने शाहजी निकल पड़े। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते एक स्थान पर वह चरता हुआ मिल गया, पर शाहजी के विस्मय का ठिकाना न रहा उन्होंने देखा कि पाड़े के पैर का नाल अथवा लोहे की चेन सोने-सी चमक रही है, उन्होंने उसे ध्यान से देखा, सचमुच ही वह स्वर्णमय था तब उन्होंने परीक्षण हेतु दूसरा पाड़ा भेजा, उसका भी नाल सोने का हो गया। फिर क्या था, थोड़ा परिश्रम करके उन्हें वहाँ पारस पथरी मिल गई और इसी पारस पथरी से उनके यहाँ अपार सम्पत्ति हो गई, जिसे जिनालयों और जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा में लगा दिया।

31

## विद्वत्परम्परा के पितामह गुरुवर्य

# पं. गोपालदासजी वरैया

- गुरुवर्य पं. गोपालदासजी वरैया स्याद्वाद-वारिधि, न्याय वाचस्पति, वादिगज केसरी, बीसवीं शती के जैन शिक्षा एवं जैन विद्यालयों के प्रवर्तक तथा वर्तमान विद्वत्परम्परा के पितामह थे।
- लोग आपकी विद्वत्ता, समाज सेवा और प्रखर वक्तृत्व शक्ति का लोहा मानते थे।
- आपने मुरैना में जैन सिद्धान्त विद्यालय की स्थापना के द्वारा गोम्मटसार, त्रिलोकसार और तत्त्वार्थराजवार्तिक जैसे महान् जैन ग्रन्थों के पठन-पाठन की प्रणाली को प्रवर्तित करके दिगम्बर जैन समाज में जैन सिद्धान्त के वेत्ता विद्वानों की परम्परा को जन्म दिया।
- वरैयाजी इस युग के महान् पुरुष थे। आपकी सहनशीलता, समयानुकूल बुद्धि, निष्पृहता, निर्भीकता आदि अनेक विशेषताएँ थीं। आपके धार्मिक एवं संस्कृत विद्या गुरु अजमेर में पण्डित मोहनलालजी एवं आगरा में पण्डित बलदेवदासजी रहे। पण्डितजी ने गुरुमुख से अल्प समय में ही अध्ययन किया। फिर भी अपने स्वालम्बन एवं निरंतर अध्यवसाय से अगाध विद्वत्ता प्राप्त कर ली थी।
- आपने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की स्थापना तथा उसकी प्रगति में असीम परिश्रम किया।
- आपने संवत् 1956 में जैन सभा बम्बई की ओर से जैन मित्र पत्र निकालना प्रारम्भ किया, इसमें आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की। आपकी कीर्ति का स्तम्भ जैनमित्र ही रहा।
- वाद-विवाद करने की शक्ति आपमें विलक्षण थी। सिद्धान्त विषय पर आप लगातार 2-3 घंटे तक प्रवचन किया करते थे। आर्य समाज से शास्त्रार्थों में आपने कई बार विजय प्राप्त की। प्रतिपक्षी भी आपकी विजय को स्वीकार कर आपको सम्मान दिया करते थे।
- आप करणानुयोग के उत्कृष्ट विद्वान् थे। पण्डित जी एक अच्छे लेखक, उपन्यासकार थे। आपकी तीन कृतियाँ हैं- जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, जैन सिद्धान्त दर्पण, सुशीला उपन्यास।
- गुरुजी ने जैन विद्वत् की विछिन्न परम्परा को सुदृढ़ बनाया।

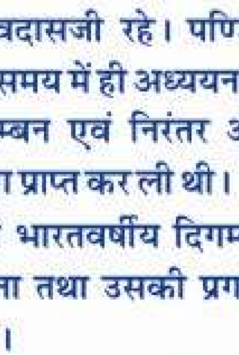

जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ की पुत्री के नाम पर ही ब्राह्मी लिपि के माध्यम से भारतीय शिक्षा और संस्कृति का विकास हुआ।

**भैरोसिंह शेखावत**

उपराष्ट्रपति, भारत सरकार

धैर्य तथा उत्तुंग व्यक्तित्व के उद्योगपति

# 32 सेठ बालचंद हीराचंद दोशी ( जैन )

( 1882-1953 )

**The patriotic industrialist whose life was a triumph of persistence over adversity.**

**Sardar Vallabhbhai Patel**

- सेठ बालचंद हीराचंद दोशी ( जैन ) 'बालचंद नगर इंडस्ट्रीज लिमिटेड' के मुख्य संस्थापक थे। वह एक देशभक्त और दूरदृष्टि रखने वाले उद्योगपति थे। भारत में उद्योग जगत् और नए प्रकल्पों की नींव आपने ही रखी थी।
- आपने हिन्दुस्थान कन्स्ट्रक्शन कंपनी ( HCC ) की 1926 में तथा रावलगाँव शुगर फैक्ट्री की 1933 में स्थापना की तथा आपके द्वारा ही हिन्दुस्थान एअरक्राफ्ट कंपनी की शुरूआत बैंगलोर में की। जो वर्तमान में हिन्दुस्तान एअरोनोटिक्स लिमिटेड ( HAL ) के नाम से जानी जाती है।
- विशाखापट्टणम् में जहाज बनाने का कारखाना 'हिन्दुस्थान शिपयार्ड' की स्थापना भी आपके द्वारा की गई।
- भारत में सबसे पहला पैसेंजर कार बनाने का कारखाना 'प्रिमियर ऑटोमोबाइल्स' सन् 1944 में मुम्बई में स्थापित किया गया।
- बालचंद नगर के आसपास की जमीन को आपने सुव्यवस्थित खेती करके गन्ने के खेतों में बदल दिया, वहाँ पर शुगर फैक्ट्री की शुरूआत की। सिंदिया स्टीम नेव्हीगेशन कंपनी की भी स्थापना की गई।
- बालचंदनगर इंडस्ट्रीज लिमिटेड, इंडस्ट्रीयल मशीनरी डिव्हीजन का निम्नलिखित क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान है - स्वनिर्मित शुगर फैक्ट्री, शुगर मशीनरी का निर्यात, नौसेना के जहाजों का गिअर बॉक्स, स्वनिर्मित सीमेंट फैक्ट्री, अणु ऊर्जा प्रकल्प के महत्त्वपूर्ण हिस्से, आकाशयान, प्रक्षेपणास्त्र के पार्ट्स, पनडुब्बी के महत्त्वपूर्ण पार्ट्स, ऑप्टीकल टेलीस्कोप आदि।
- आप भारत सरकार, संरक्षण मंत्रालय की तरफ से देश के प्रति सेवा के कारण कई बार सम्मानित हुए।
- आज भी आपके द्वारा स्थापित कंपनियाँ देश व समाज के विकास में योगदान दे रही हैं।
- भारत सरकार द्वारा 23.11.2004 में प्रसिद्ध जैन उद्योगपति बालचंद हीराचंद दोशी के नाम पर डाक टिकट जारी किया गया।

# 'बालचंद नगर इंडस्ट्रीज लिमिटेड' द्वारा निर्मित मशीनरी एवं उपकरण

# 33 जैन लॉ के प्रणेता : बैरिस्टर चम्पतराय जैन

- बैरिस्टर चम्पतरायजी राष्ट्रीय चेतना के जागरण एवं उत्थान के प्रतीक थे।
- आपने इंग्लैण्ड में जाकर 1897 में बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की।
- मृदुभाषी और मिलनसार स्वभाव के कारण आप शीघ्र ही कानूनी जगत् व सामान्य व्यक्तियों के बीच भी लोकप्रिय हो गए।
- विदेशों में जैनधर्म के प्रचार करने में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।
- सम्मेदशिखरजी तीर्थराज की रक्षा के लिए आपने लंदन जाकर पैरवी की। लंदन में ही ऋषभ जैन लायब्रेरी तथा जैन सेंटर की स्थापना की।
- आपने जैन लॉ का निर्माण कर जैन मुनियों के विहार पर प्रतिबंध हटवाया था।
- आपके द्वारा की गई सेवाओं के कारण बाबू कामताप्रसादजी आपको 'ग्रेट मैन ऑफ लैटर्स' कहा करते थे।
- बैरिस्टर साहब वस्तुतः जैन पुरातत्त्ववेत्ता थे। तुलनात्मक धर्म और विज्ञान को अधिक महत्त्व प्रदान करते थे। आपकी प्रमुख की आफ नॉलेज आदि 13 विशिष्ट और भी अनेक कृतियाँ हैं। आपने मूलतः अपनी रचनाओं में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि जैनधर्म प्राचीन एवं विश्वधर्म है।
- 'सादा जीवन उच्च विचार' के आदर्श को अपनाने वाले बैरिस्टर साहब को 'विद्यावारिधि', 'जैनधर्म दिवाकर' जैसी उपाधियों से सम्मानित किया गया था, किन्तु आपकी सादगी ने भविष्य में कोई उपाधि न स्वीकार करने की प्रतिज्ञा कर ली।
- बैरिस्टर साहब केवल धर्मतत्त्व के दार्शनिक वेत्ता या श्रद्धालु नहीं थे, वरन् उन्होंने धर्म को अपने जीवन में यथासम्भव मूर्तिमान बनाने का उद्यम किया पञ्चाणुव्रतों का पालन करने वाले बैरिस्टर साहब ने विलायत में रहते हुए भी संयमी जीवन व्यतीत किया एवं सदा दिगम्बर साधु बनने की भावना रखते थे।

# आदर्श मुख्यमंत्री

# 34 श्री मिश्रीलाल गंगवाल

( 1902 - 1981 )

- तत्कालीन मध्य भारत के मुख्यमंत्री रहे, मालवा के गाँधी के नाम से विख्यात, अपने स्नेहिल व्यवहार से भैय्याजी उपनाम से प्रसिद्ध श्री मिश्रीलालजी गंगवाल नैतिक मूल्यों के देवदूत, स्वयंसेवक रत्न, जैन वीर, जैन रत्न जैसी अनेक उपाधियों के धारक थे।
- 1951-52 में भारत के प्रथम आम चुनाव में निर्वाचित होकर मुख्यमंत्री का पद संभाला तथा अनेक मुख्यमंत्रियों के काल में आप वित्त मंत्री बनाये गये, इसका मूलकारण यह था कि जैसे आप अपने जीवन में मितव्ययी थे, वैसे ही शासन में भी थे।
- गंगवाल साहब के मितव्ययी स्वभाव के संदर्भ में उनके पुत्र श्री निर्मलजी ने लिखा है- हम जिस बंगले में रहते, क्या मजाल है कि कहीं भी बिजली के बल्ब फालतू जलें। इसलिए बिजली और टेलीफोन का बिल पूरे मंत्री-परिषद् की अपेक्षा सबसे कम आता था। कभी-कभी स्वयं पत्र लिखते तो आने वाले लिफाफे को खोलकर, पीछे की तरफ में पत्र लिखते। एक होलडाल और एक सूटकेस ही हमने उनके पास जीवन भर देखा। कभी हमने उन्हें साबुन का इस्तेमाल करते नहीं देखा, स्नान भी तीन या चार लोटे पानी में कर लेते। पानी के उपयोग की बड़ी पाबन्दी थी। इसके बावजूद उनकी काया कंचन थी।
- आर्थिक मसलों पर उनकी सूझबूझ और वित्त एवं योजना-विकास-मंत्री के रूप में उनके दीर्घकालीन-अनुभवों को मद्देनजर रखकर श्री प्रकाशचन्द सेठी ने 1975 में गंगवालजी को राज्य योजना आयोग का सदस्य मनोनीत किया था।
- व्यायाम और संगीत आपको विशेष प्रिय थे। इतने ऊँचे पद पर आसीन होने के बाद भी वे सभाओं में भजन गाने में संकोच नहीं करते थे।
- राजनीति के साथ सामाजिक एवं धार्मिक-जगत् के आप केन्द्र-बिन्दु रहे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ अंतरंग आत्मीयता, निश्छल स्नेह आपके गुण थे। सेवा परायणता और विनम्रता तो जैसे आपके रक्त में मिली थी। जो भी आपके सम्पर्क में एक बार आया, वह आपका होकर ही रह गया।
- शैक्षणिक और साहित्यिक गतिविधियों से गंगवाल साहब सदैव जुड़े रहे। गरीब विद्यार्थियों को विद्या-अध्ययन-हेतु सहायता करना उन्हें अत्यन्त प्रिय था। इन्दौर के कितने ही विद्यालयों/पुस्तकालयों के संस्थापक/अध्यक्ष/मंत्री आदि थे।
- आपने मुख्यमंत्री होने पर भी राजकीय अतिथि को माँसाहार कराने से पं. जवाहरलाल नेहरु को मना कर दिया था तथा आगुन्तक अतिथि को शुद्ध शाकाहारी भोजन करवाकर संतुष्ट किया।

श्री दानवीर तीर्थभक्त रायबहादुर जैन सम्राट्

# 35 श्रीमंत सरसेठ हुकमचंद जैन

( 1874-1973 )

- सरसेठ हुकमचन्द जैन का जन्म 1874 में इन्दौर के कासलीवाल परिवार में हुआ था। आप भारतीय उद्योग के एक अग्रणी व्यापारी थे तथा लगभग 50 वर्षों तक जैन समुदाय के प्रमुख नेता थे। आपका धार्मिक और सामाजिक सेवा में अद्वितीय स्थान है।
- आपने जैन तीर्थ की रक्षा एवं अनेक मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य बड़ी तत्परता से कराया।
- वे अपने प्रभाव से धार्मिक एवं सामाजिक मुद्दों को बहुत आसानी से सुलझा दिया करते थे।
- आप जैन मुनियों के परम भक्त थे, धार्मिक कार्यों में अधिक समय व्यतीत करते थे।
- आपको सन् 1915 में रायबहादुर बनाया गया था 1919 में सर नाईट के शीर्षक के साथ सम्मानित किया गया। इंदौर के शासकों ने आपको राज्यभूषण रावराजा और राज्य रत्न के शीर्षक से सम्मानित किया था। आप गरीबों, किसानों के हमेशा मददगार रहे।
- सेठ साहब के दान का विशाल प्रभाव कई दिशाओं में प्रवाहित हुआ। जवेरी बाग-विश्रांति भवन, महाविद्यालय, बोर्डिंग हाऊस, श्री सौ. कंचनबाई श्राविकाश्रम, प्रिंस यशवंतराव औषधालय, भोजनशाला, प्रसूतिका गृह आदि कई प्रख्यात संस्थायें सेठ साहब के उदार दान से संचालित हुईं।
- कठिन से कठिन परिस्थिति में भी आप सागर के समान गंभीर और हँसमुख रहा करते थे। अविचल सहिष्णुता, ब्रह्मचर्य निष्ठा, उदारता, निरभिमानता, धार्मिकता एवं परोपकारिता तथा मितव्ययता आपके असाधारण गुण थे। शील और संयम के लिए सेठ साहब धनिक समाज में आदर्श माने जाते थे।
- इंदौर, कलकत्ते आदि में आपके बड़े-बड़े रुई, जूट, स्टील के कारखाने और बम्बई, उज्जैन आदि शहरों में बड़ी-बड़ी कोठियाँ हैं। आपके करोड़ों का व्यापार देश-विदेश में फैला हुआ था और हजारों आदमी उनमें काम करते थे।
- आचार्य शांतिसागरजी महाराज से 60 वर्ष की अवस्था में आपने ब्रह्मचर्य व्रत लिया था।सेठ साहब को बाल्य-काल से ही धर्म शास्त्र पढ़ने व धर्मचर्चा करने की बहुत रुचि थी। धर्मात्मा पुरुषों के मिलने से आपका हृदय पुलकित हो जाता था। आप विद्वानों का सम्मान सदैव बनाये रखते थे। आपने स्वयं कितने ही शास्त्रों का अध्ययन किया।
- शीलव्रत के प्रभाव से व निरंतर व्यायाम के अभ्यास से आपकी शारीरिक सम्पत्ति 60 वर्ष की अवस्था में भी नौजवानों से कहीं अधिक सुदृढ़ थी और आपके चेहरे पर एक प्रकार की दिव्य कांति और तेज सदैव चमकता रहता था।
- सेठ साहब अपने जीवन के अंतिम समयों में शरीर की समस्त मूल्यवान वस्तुओं का त्याग कर धोती-दुपट्टे में रहते थे। अंतिम समय शांतिपूर्वक णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुए बीता।

# 36 साहित्य मनीषी, उत्कृष्ट शिक्षाविद्
# डॉ. पण्डित पन्नालाल साहित्याचार्य

- बहुमुखी-प्रतिभा सम्पन्न एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित पण्डितजी का जन्म पारगुवां ( सागर ) में 5 मार्च, 1911 को हुआ। बाल्य काल से ही आप विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। अर्थाभाव के कारण आपने बाल्यकाल से संघर्ष किया, किन्तु आप अपनी लगन एवं परिश्रम के कारण प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण रूप से सफल हुए।
- डॉ.पन्नालालजी साहित्याचार्य की गणना जैन समाज के प्रथम पंक्ति के विद्वानों में की जाती है। पण्डित जी अपने शान्त स्वभाव, सरल व्यक्तित्व और व्रती आचरण से जन-जन की श्रद्धा के पात्र थे। आपके व्यक्तित्व में श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र की त्रिवेणी के दर्शन होते थे।
- पंडितजी देश के उन ख्याति प्राप्त विद्वानों में से एक थे, जिनकी लेखनी लगभग 50 वर्ष तक अनवरत चलती रही। आपने लगभग 65 ग्रन्थों का सम्पादन और अनुवाद किया। आपने कुछ ग्रन्थ संस्कृत में मौलिक रूप से लिखे। 25 ग्रन्थ प्रथमानुयोग, 7 ग्रन्थ करणानुयोग, 19 ग्रन्थ चरणानुयोग तथा 14 ग्रन्थ द्रव्यानुयोग के हैं। स्तोत्रादि के ग्रन्थ के अतिरिक्त आपके द्वारा अन्य सम्पादित और संयोजित स्मृति ग्रन्थ व स्मारिकाएँ भी हैं।
- आपको महाकवि हरिचन्द्र एक अनुशीलन ग्रन्थ पर पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त हुई।
- आपने जीवन में जितनी साहित्य सेवा की है, उसका मूल्यांकन सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर हुआ। भारत सरकार, मध्यप्रदेश सरकार एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं की ओर से पंडितजी को अनेक बार सम्मानित किया गया।
- आपके विद्यार्जन का प्रमुख केन्द्र सागर एवं विद्वानों की जननी काशी रही है, आध्यात्मिक संत प्रवर पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी के सान्निध्य में आप बहुत समय तक रहे हैं। जीवन के अंतिम 15 वर्ष तक वर्णी जी द्वारा स्थापित श्री वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल, जबलपुर में मूल ग्रन्थों का पठन-पाठन कराकर लगभग 21 ब्रह्मचारी भाइयों को जैन विद्या में निष्णात बनाया।
- आप संस्कृत भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक, कवि, सफल टीकाकार, चिन्तक, विचारक एवं आदर्श शिक्षक के रूप में रहे।
- आपकी साहित्यिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक सेवाओं की सूची बहुत लम्बी है, जिस पर एक स्वतंत्र पुस्तक लिखी जा सकती है।

# 37 युवा जैन संगठन : वीर सेवा दल

श्री बाबा साहब कुचनुरे

- दक्षिण भारत जैन सभा के दावणगिरी अधिवेशन में 26 जनवरी, 1979 के दिन गुरुदेव समन्तभद्रजी के शुभाशीष और प्रेरणा से वीर सेवा दल की स्थापना हुई। डॉ. धनंजय गुंडेजी प्रस्तावित एवं स्व. डॉ डॉ. एन.जे. पाटील अनुमोदित यह युवा संगठन समाज का भूषण है।
- इस दल के संगठन को मजबूती प्रदान करने में बाल ब्रह्मचारी श्री बाबा साहब कुचनुरे जी ( एडवोकेट ) ने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। 32 वर्ष की युवावस्था में उनका देहावसान हो गया।
- आत्मविश्वास, धर्मसंस्कार, सेवाकार्य, राष्ट्रीय विचारधारा, व्यक्तित्व विकास, व्यसनमुक्त समाज का निर्माण, पर्यावरण संरक्षण, शाकाहार प्रचार, व्यवसाय मार्गदर्शन आदि के लिए यह दल सेवाभावी युवा संगठन के रूप में लगभग 30 साल से महाराष्ट्र और कर्नाटक प्रांत में कार्यरत है।
- वीर सेवा दल की 180 गाँव में शाखायें एवं लगभग 10,000 स्वयंसेवक कार्यरत हैं।
- धार्मिक एवं सामाजिक कार्य करते हुए सेवादल के लगभग 18 युवकों ने मुनि दीक्षा धारण कर आत्मकल्याण के श्रेष्ठ पथ को अपनाया, यह समाज के लिए अत्यन्त ही गौरव की बात है। इसके साथ ही अनेक कार्यकर्ता ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर आत्मकल्याण एवं समाज सेवा में जुटे हुए हैं।
- बाल संस्कार एवं आदर्श श्रावक निर्माण के उद्देश्य से लगभग 181 गाँव में जैन पाठशालायें, लौकिक शिक्षा क्षेत्र में 4 शिक्षण संस्थाएँ एवं अर्थ सहकार क्षेत्र में 3 पत संस्थाएँ/क्रेडिट कोअपरेटिव सोसायटीज सेवा दल द्वारा संचालित संस्थाएँ हैं।
- समाज के आमंत्रण पर लगभग 1000 से अधिक प्रतिष्ठा आदि धार्मिक कार्यक्रमों में सेवादल द्वारा सेवाएँ प्रदान की जा चुकी हैं एवं आगे भी की जाती रहेंगी।

38

# विद्वत् परम्परा का गौरव
# श्रमण संस्कृति संस्थान

- सांगानेर, जयपुर में श्रमण शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद तथा मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज की पावन प्रेरणा से 13 अक्टूबर, 1996 को श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान की स्थापना हुई। यह भारत वर्ष में दिगम्बर जैन समाज का विद्वानों को तैयार करने वाला अद्वितीय संस्थान है।
- संस्थान का मुख्य उद्देश्य संस्कारित, आगम पारंगत विद्वानों को तैयार कर आर्षमार्गीय सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करना है। संस्थान के छात्रों को आवास, भोजन, शिक्षण आदि सभी प्रकार की सुविधाएँ समाज के सहयोग से नि:शुल्क प्रदान की जाती हैं।
- इस छात्रावास में अंग्रेजी विषय सहित 10 वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र ही प्रवेश ले सकते हैं, जिन्हें राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन नियमित छात्र के रूप में श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर में कराया जाता है।
- संस्थान में कनिष्ठोपाध्याय ( 11 वीं ) से शास्त्री तृतीय वर्ष ( बी. ए. समकक्ष ) के छात्रों को पाँच वर्षों में लौकिक शिक्षा के साथ-साथ प्रतिवर्ष विभिन्न शास्त्रों का गहन अध्ययन कराया जाता है।
- महाविद्यालय के पाठ्यक्रम एवं पठन के अतिरिक्त संस्थान में जैन दर्शन, प्राकृत, संस्कृत, ज्योतिष, वास्तुशिल्प, कम्प्यूटर एवं अंग्रेजी आदि विषयों का अध्ययन कराया जाता है।
- इस छात्रावास में रहते हुए शास्त्री ( स्नातक ) परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् जैन दर्शन का एक योग्य विद्वान् तो हो ही जाता है, साथ ही आई. ए. एस., आर. ए. एस., एम. बी. ए. जैसी सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकता है तथा अपनी प्रतिभा के अनुरूप अपेक्षित विषयों का चयन कर उच्च शिक्षा एवं पद प्राप्त कर सकता है।
- संस्थान से अभी तक 250 स्नातक विद्वान् हैं, जो समाज को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।
- इसी तरह से मथुरा में श्रमण ज्ञान भारती, हैदराबाद में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल, इंदौर में महाकवि ज्ञानसागर छात्रावास, प्रतिभा चयन छात्रावास, जबलपुर में श्री वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल आदि संस्थाएँ संचालित हैं।

## 39

# अनोखा क्षेत्र
# दिगम्बर जैन चैतन्य वन संस्थान

- श्री दिगम्बर जैन चैतन्य वन संस्थान एक वनौषधि प्रकल्प है, जिसे एक आध्यात्मिक अनुष्ठान भी प्राप्त है, चैतन्य वन में भगवान् आदिनाथ मंदिर, भगवान् बाहुबली, मानस्तंभ एवं दिगम्बर जैन आम्नायानुसार चैत्य निर्मित है।
- प्रकृति की गोद में बसा यह एक अनोखा क्षेत्र है। धूलिया जिले के सोनगिर ग्राम में स्थित है, श्री चेतनकुमार जैन संस्थापक एवं संरक्षक हैं।
- परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के विहार के उपलक्ष्य में मुख्य प्रवेश द्वार का नामकरण विद्यासागर प्रवेश द्वार किया गया है।
- क्षेत्र पर धार्मिकता से जुड़ी अनेक आकर्षक योजनाएँ मूर्त रूप में प्रदर्शित हैं –
  1. मानस सरोवर स्थित जल मंदिर, कैलाशगिरि प्रतीक पर्वत, रत्नत्रय उद्यान, आचार्य कुन्दकुन्द वन, वनौषधि ग्रन्थालय एवं धार्मिक ग्रन्थालय।
  2. चौबीस तीर्थंकर केवलज्ञान वृक्ष स्थली – जिस वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए तीर्थंकरों को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था, ऐसे वृक्ष यहाँ पर लगे हुए हैं, वृक्ष के नीचे तीर्थंकरों के चरण चिह्न भी स्थापित हैं।
  3. नक्षत्र वन – प्राचीन कल्पनानुसार यहाँ पर 27 नक्षत्रों के आराध्य वृक्ष के रूप में 27 वृक्ष लगे हुए हैं, उनके नीचे बैठने के लिए स्थान बना है। ऐसा माना जाता है कि जिस नक्षत्र में व्यक्ति का जन्म हुआ हो उसके आराध्य वृक्ष के नीचे बैठने से उसका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
  4. ध्यान केन्द्र – यहाँ तीन पिरामिड की रचना की गई है, ध्यान केन्द्र का वातावरण शान्तमय एवं आह्लादकारक महसूस होता है।
- हर्बल ( वनौषधि ) के बारे में वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान देने के उद्देश्य से यहाँ चैतन्य वन कॉलेज ऑफ हर्बल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी स्थापित है, जिसमें भारत की नैसर्गिक वनौषधियाँ एवं उससे निर्मित औषध एवं प्रसाधन सामग्री का ज्ञान कराया जायेगा। यह कॉलेज भारत वर्ष में पहला एकमेव महाविद्यालय होगा, जहाँ से हर्बल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी विषय में पदवी प्राप्त होगी।

# 40 विलक्षण प्रतिभावान युवा वैज्ञानिक

अंशुल कहते हैं कि पूरी मानवता और प्राणीमात्र के कल्याण के लिए मैं जैनेटिक के क्षेत्र में आया। जिस परीक्षा को देकर मैं 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सफल हुआ हूँ। उसके लिए प्रवेश की पात्रता उन्हीं को है, जो शाकाहारी हैं, आलू, प्याज, लहसुन अथवा तामसिक आहार नहीं करते अन्यथा उसको छोड़ना पड़ता है। इसका कारण है कि इनसे क्रोध और तामसिक प्रवृत्ति पैदा होती है और इस क्षेत्र में धैर्य और शांत चित्त की आवश्यकता है। मैं जैन हूँ इसलिए मुझे प्रवेश में सरलता से पात्रता मिली, इसका मुझे गर्व है।

- अंशुल जैन, उम्र 23 वर्ष, जैनेटिक साइंस के छात्र हैं तथा इन्दौर ( म. प्र. ) के निवासी हैं। श्री डी. जैन एवं श्रीमती कल्पना जैन के सुपुत्र हैं। ताऊ डॉ. श्री सुरेन्द्र जैन हैं एवं अग्रज हैं डॉ. अंकुर जैन। उच्च शिक्षित परिवार की पृष्ठभूमि से उन्हें प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिला। वर्तमान में डब्ल्यू. एच. ओ. के डी. ओ. ई. में बतौर जूनियर वैज्ञानिक कार्यरत हैं। जैनेटिक साइंस के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा का लोहा दुनियां भर के साइंटिस्ट मान चुके हैं।
- विश्व के सबसे जूनियर साइंटिस्ट अंशुल जैन ने अपनी काबिलियत की छाप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरे विश्व में उस समय स्थापित कर ली जब इन्होंने भारत में ही रहते हुए 1-2 नहीं पूरे 42 अनसुलझे अन्तर्राष्ट्रीय अपराधिक वारदातों को सुलझाकर दुनिया भर के अपराध विशेषज्ञों, सुपर कॉप्स और फोरेंसिक मेडिसिन साइंटिस्ट को चकित कर दिया है। अंशुल जैनेटिक साइंटिस्ट हैं और उनका नाता मानव रक्त में मौजूद गुणसूत्रों व डी. एन. ए. से है, उन्होंने रक्त और जीन्स के नमूनों के आधार पर ही अपराधियों को बेनकाब किया है।
- भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने अंशुल जैन को ओजोन मैन ऑफ द वर्ल्ड घोषित किया है। कलाम साहब ने उपलब्धियों को उत्कृष्ट बताते हुए एक व्यक्तिगत पत्र भी लिखा था।
- दुनिया भर से अंशुल जैन की अविश्वनीय प्रतिभा से चमत्कृत लोगों के बधाई पत्र भारत की माननीय राष्ट्रपति महोदया को मिले। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने अंशुल की उपलब्धियों से अभिभूत होकर एक व्यक्तिगत बधाईपत्र भी प्रेषित किया है।
- श्री जैन की विलक्षण बुद्धि से प्रभावित होकर अमेरिका की फोरेंसिक रिसर्च काउंसिल ने क्राइम इन्वेस्टिगेशन सेल में उन्हें मनोनीत किया है।

41

## विश्व की अद्वितीय धरोहर

# सिवनी का रजत रथ

- रजत रथ का निर्माण वाराणसी में सन् 1930 में किया गया था। जिसकी लागत 20000 रुपये थी।
- यह रजत रथ विश्व में अद्वितीय एवं जैन समाज की बहुमूल्य धरोहर है।
- रथ पेट्रोल मोटर के ऊपर निर्मित है। रथ को खींचने हेतु दो रजत अश्व जुते हुए हैं। अश्व हूबहू घोड़ों के माप के बने हुए हैं। रथ का संचालक सारथी अश्वों की लगाम अपने हाथों में थामता है। पीछे श्रीजी को विराजमान करने के लिए काष्ठ का सिंहासन बना हुआ है, जिसमें स्वर्ण एवं रजत का पत्ता चढ़ा हुआ है।
- रथ के ऊपर जिन मंदिर के भाँति आकर्षक शिखर बने हुए हैं एवं नीचे वेदी का आकार बना हुआ है। इसी वेदी में सिंहासन पर त्रिछत्र के नीचे श्री जी विराजमान होते हैं।
- श्रीजी के दोनों ओर रथ पर भक्त खड़े होते हैं, जो चंवर ढुराकर श्रीजी के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हैं।
- रथ के दोनों ओर दो सुन्दर द्वारपालों की रजतपत्र से निर्मित अत्यन्त आकर्षक प्रतिमायें बनी हुई हैं।
- रथ के नीचे चारों ओर छोटे-छोटे घुंघरू लगे हुए हैं। रथ के चलने पर इनसे सुन्दर कर्णप्रिय ध्वनि चारों ओर गुंजायमान होती है।

# इन्हें जानिए और लाभ लीजिए

केन्द्र एवं राज्य शासनों के द्वारा समय-समय पर जनता को सुविधा प्रदान करने हेतु परिपत्र या अधिसूचनाएँ जारी की जाती हैं। उनकी समुचित जानकारी के अभाव में शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं/व्यवस्थाओं का लाभ लेने से जन सामान्य वंचित रह जाता है। मध्यप्रदेश शासन के द्वारा निर्गमित तीन शासनादेशों को नीचे सूचित किया जा रहा है। इनके आधार से मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के निवासी इनका सदुपयोग कर/करा सकते हैं। साथ ही अन्य राज्यों में स्थित व्यक्ति अपने प्रदेश में इस प्रकार के शासनादेशों की जानकारी प्राप्त करके जन सामान्य को सुलभ कराने हेतु प्रचारित कर सकते हैं। कदाचित् इस प्रकार के शासनादेश अन्य प्रान्तों में यदि वर्तमान में जारी नहीं किए गए हों तो प्रबुद्ध एवं जागरुक श्रावक, सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी, राजनैतिक दलों से सम्बद्ध कार्यकर्ताओं से भी अपेक्षा की जाती है कि वे इस प्रकार के शासनादेश अपने प्रदेशों में भी निर्गमित कराने हेतु सार्थक एवं समुचित प्रयास करें।

अ- मध्यप्रदेश के राज्यपाल के नाम तथा आदेशानुसार मध्यप्रदेश शासन के सामान्य प्रशासन विभाग के अपर सचिव बी. एस. वर्मा के हस्ताक्षर से परिपत्र क्रमांक/ एम-3/15/85/1/4 भोपाल, दिनांक 2 अगस्त, 1985 को प्रसारित किया गया था। मध्यप्रदेश शासन के समस्त संभागाध्यक्ष, समस्त विभागाध्यक्ष एवं समस्त जिलाध्यक्षों को अनंत चतुर्दशी के उपलक्ष्य में जैन धर्मावलम्बी शासकीय कर्मचारियों को विशेष आकस्मिक अवकाश दिए जाने बावत् निर्देश जारी किया गया था।

उपर्युक्त परिपत्र में निर्देशित किया है कि राज्य शासन द्वारा निर्णय लिया गया है कि अनंत चतुर्दशी पर्व के उपलक्ष्य में शासकीय सेवाओं/संस्थाओं में कार्यरत सभी जैन धर्मावलम्बी कर्मचारियों को विशेष आकस्मिक अवकाश स्वीकृत किया जाए। यह विशेष आकस्मिक अवकाश उन कर्मचारियों को देय होगा, जिन्होंने इस दिन के अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया हो।

ब- मध्यप्रदेश के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार मध्यप्रदेश शासन के स्थानीय शासन विभाग के अपर सचिव एस. पी. वर्मा के हस्ताक्षर से परिपत्र क्रमांक 906/69 मं./18-3/90, भोपाल दिनांक 18.5.90 को शासनादेश जारी हुआ था। इसमें संचालक-नगर प्रशासन-भोपाल, समस्त जिलाध्यक्ष एवं समस्त संभागीय उपसंचालक-नगर प्रशासन-मध्यप्रदेश को विशिष्ट अवसरों पर पशु वध गृह बंद रखने बावत् विषय निर्देशित किया है कि आपके क्षेत्र में स्थित समस्त स्थानीय निकायों को तदनुसार उचित कार्यवाही के लिए निर्देशित करें। इस विभाग ने अपने ही पूर्व के परिपत्र क्रमांक 5666/330/18नगर/एक, दिनांक 16अगस्त 1971 को निरस्त करते हुए राज्य शासन के उपर्युक्त परिपत्र के माध्यम से आदेशित किया जाता है कि नीचे दिए गए विशिष्ट अवसरों पर, स्थानीय निकायों की सीमा में स्थित समस्त पशुवध गृह एवं माँस बिक्री की दुकानें बंद रखी जाएँ। राज्य शासन द्वारा इस हेतु जिन 17 विशिष्ट अवसरों का निर्धारण किया है, वे निम्नलिखित हैं-

1. गणतंत्र दिवस, 2. गांधी निर्वाण दिवस, 3. महावीर जयंती, 4. बुद्ध जयंती, 5. स्वतंत्रता दिवस, 6. गांधी जयंती, 7. रामनवमी, 8. डोल ग्यारस, 9. पर्युषण का प्रथम दिन, 10. पर्युषण का अन्तिम दिन, 11. अनंत चतुर्दशी, 12. जन्माष्टमी, 13. संत तारण तरण जयंती, 14. पर्युषण पर्व में संवत्सरी व उत्तम क्षमा, 15. भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण 16. चैती चाँद एवं 17. गणेश चतुर्थी।

स. मध्यप्रदेश के राज्यपाल के नाम तथा आदेशानुसार मध्यप्रदेश के सामान्य प्रशासन विभाग के द्वारा परिपत्र क्रमांक एम-3-5/1990/1/4, भोपाल, दिनांक 17 जनवरी 1992 को निर्गमित हुआ था। राज्य शासन के द्वारा विशेष सुविधा प्रदान की गई हैं। इसमें उल्लेखित है कि राज्य शासन द्वारा श्वेताम्बर एवं दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी कर्मचारियों को प्रतिवर्ष उनके पर्युषण पर्व के लिए क्रमश: भाद्रपद कृष्ण 11 से भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्थी या पंचमी तक और भाद्रपद शुक्लपक्ष 5 से 15 तक धार्मिक कृत्य करने के लिए कार्यालय में 12 बजे तक पहुँचने की सुविधा प्रदान की गई है, बशर्ते कि इससे शासकीय कार्य पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़े और कर्मचारी अपना कार्य अद्यतन रखें।

साभार - 30 सितम्बर, 2008, जिनभाषित

# 21 वीं शताब्दी का धर्म : जैनधर्म

मुज़फ्फर हुसैन, मुम्बई

- हम यहाँ कर्मकाण्ड के रूप में नहीं, बल्कि दर्शन के आधार पर यह कहना चाहेंगे कि 21 वीं शताब्दी का धर्म जैनधर्म होगा। इसकी कल्पना किसी सामान्य आदमी ने नहीं की है, बल्कि बर्नाड शा ने कहा है कि यदि मेरा दूसरा जन्म हो तो मैं जैनधर्म में पैदा होना चाहता हूँ। रेवेरेंड तो यहाँ तक कहते हैं कि दुनिया का पहला मजहब जैन था और अन्तिम मजहब भी जैन होगा। बाल्टे यू. एस. एस. के दार्शनिक मोराइस का तो यहाँ तक कहना है कि यदि जैनधर्म को दुनिया ने अपनाया होता तो यह दुनिया बड़ी खूबसूरत होती।
- जैन, धर्म नहीं जीने का दर्शन है। सरल भाषा में कहूँ तो यह खुला विश्वविद्यालय है। आपको जीवन का जो पहलू चाहिए, वह यहाँ मिल जायेगा। दर्शन ही नहीं बल्कि संस्कृति, कला, संगीत एवं भाषा का यह संगम है। जैन तीर्थङ्करों ने संस्कृत को न अपनाकर पाली और प्राकृत को अपनाया, क्योंकि वे जैनदर्शन को विद्वानों तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, बल्कि वह तो सामान्य आदमी तक पहुँचे और उसके जीवन का कल्याण करे।
- दुनिया के सभी धर्मों ने अपने चिह्न तय किए। इसमें कुछ हथियारों के रूप में तो कुछ आकाश में चमकने वाले चाँद और सूरज के रूप में। 24 तीर्थङ्करों में एक भी ऐसा नहीं दिखलाई पड़ता, जिनके पास धनुष-बाण हो या गदा अथवा त्रिशूल। हथियारों से लैस दुनिया के राजा अपनी शानो-शोकत से अपना दबदबा बनाये रखने में अपनी महानता समझते थे, लेकिन यहाँ तो ईश्वर के बनाये हुए भोले पशु-पक्षी अथवा जलचर प्राणी उनके साथ हैं।
- इंसान की सुविधा के लिए घोड़े, हाथी, गरुड़, मोर और न जाने किन-किन को अपनी सवारी बना ली, लेकिन जैन तीर्थङ्कर तो किसी को कष्ट नहीं देना चाहते हैं। वे अपने पाँव के बल पर सारी दुनिया को उलांगते हैं और प्रकृति के भेद को जानने की कोशिश करते हैं। रहने को घर नहीं, खाने को कोई स्थायी व्यवस्था नहीं, लेकिन दुनियां के कष्टों का निवारण करने के लिए अपनी साधना में कोई कमी नहीं आने देते।
- हर वाद ने व्यक्ति को छोटा कर दिया है, लेकिन हम देखते हैं कि जैन विचार ने मनुष्य को सबसे महान् बना दिया है।
- दुनिया के अन्य धर्म मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाकर उसे जीवनयापन करने के लिए लाचार बना देते हैं, लेकिन यहाँ तो मनुष्य की अपनी स्वतन्त्रता सर्वोपरि है।
- जैनदर्शन में हिंसा को पराजित करने में तीन 'अ' का महत्त्व है। ये हैं- अहिंसा, अनेकान्तवाद और अपरिग्रह। तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं वे अलग नहीं हो सकते।
- भारत को न जीत सकने वाला सिकंदर जब एथेंस लौट रहा था तो उसे एक जैन साधु ने कहा था कि दुनियां को जीतने वाले काश तुम अपने आप को जीत सकते, जैन साधु सिकंदर के साथ गये थे।
- जैन साधु कल्याण मुनि सिकंदर के बाद भी एथेंस में वर्षों तक लोगों को अहिंसा का संदेश देते रहे। एथेंस में सब कुछ बदल गया है, लेकिन आज भी वहाँ उन जैन साधु की प्रतिमा लगी हुई है।
- प्लेटो और एरिस्टोटल का एथेंस इतना प्रभावित हुआ कि पायथागोरस जैसा महान् गणितज्ञ यह कहने लगा कि मैं जैन हो गया हूँ।
- 21 वीं शताब्दी पानी के संकट की शताब्दी बनने वाली है। जैन मुनि तो कम पानी पीकर अपना काम चला लेते हैं, लेकिन हम जैसे लोग क्या करेंगे? उसका मूल मंत्र है शाकाहार।
- 21वीं शताब्दी में जिस नारी स्वतन्त्रता की बात की जाती है, जैनधर्म में झाँककर देखो तो जैन साध्वियों को कितना बड़ा सम्मान मिलता है। वे पूजनीय हैं। धर्म को पढ़ाती और सिखलाती हैं।
- दासी और भोगिनी को साध्वी बना देने का चमत्कार केवल जैनधर्म ने किया है। समानता और स्वतन्त्रता के साथ उनका स्वाभिमान स्थापित किया है।
- जैनधर्म का भेदविज्ञान आत्मा और शरीर को अलग कर देने वाला बहुत पुराना विज्ञान है। आत्मा ही तो एटम है और समस्त दुनिया में शक्ति का संचार करती है।
- यदि आप अध्यात्म के आधार पर इसका विचार करते हैं, तो फिर आपको जैनदर्शन की ओर लौटना पड़ेगा। नागरिकता और राष्ट्रीयता इन दिनों हर देश के मानव का आधार है। लेकिन जब तक समानता और स्वतन्त्रता नहीं मिलती, यह शब्द खोखले मालूम पड़ते हैं। मनुष्य के कष्टों का निवारण और अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर उसका उद्धार केवल अनेकान्तमयी जैनदर्शन के माध्यम से ही सम्भव है।

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म.प्र.)

ISBN 978-93-82950-07-3
Price : 40/-